Parampara

परम्परा

सम्पादक नारायणसिंह भाटी

राव इन्द्रसिंह री झमाळ

परामर्श समिति

डॉ० कन्हैयालाल सहल
श्री अगरचन्द नाहटा
प्रो० नरोत्तमदास स्वामी
डॉ० मोतीलाल मेनारिया
डॉ० रघुवीरसिंह सीतामऊ
डॉ० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

परम्परा

राव इन्द्रसिंह री झमाळ

(कवि सबळजी सांदू कृत)

सम्पादक
डॉ० नारायणसिंह भाटी
निदेशक
राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी
जोधपुर



प्रकाशक
जोधपुर विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त शोध केन्द्र
राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी,
जोधपुर

प्रकाशक :
चौपासनी शिक्षा समिति द्वारा संस्थापित
राजस्थानी शोध संस्थान
चौपासनी, जोधपुर.

परम्परा : भाग ४४
मूल्य : ३ रू०
सन् : १९७६

मुद्रक :
हरीदत्त थानवी
सुमेर प्रिंटिंग प्रेस
जोधपुर.

विषय-सूची

"एक ओर गीत जहाँ प्राचीन घटनाओं की ऐतिहासिक जानकारी के बहुत बड़े साधन हैं, वहाँ दूसरी ओर तात्कालिक परिस्थितियों पर लोक-हृदय की समीक्षा का विवरण इन गीतों में मिल जाता है। इतिहास के शुष्क कंकाल को इन गीतों ने लोकोर्मियों के सजीव रुधिर मांस से आपूरित कर दिया है।"

—झवेरचन्द मेघाणी

सम्पादकीय

अंग्रेजी की यह कहावत प्रसिद्ध है– *Nothing Succeeds like Success.*

इतिहास का निर्माण राजनीति के हाथों होता है परन्तु उसमें उक्त कहावती तत्व बराबर काम करता आया है यह तथ्य अनेकानेक राजनैतिक हलचलों की गहराई में जाने से ही समझा जा सकता है। इन गहराइयों को समझना जोखना ही सही मायने में राज-नीति-दर्शन का उद्देश्य भी होना चाहिए। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रख कर ऐतिहासिक साहित्य की कृतियों का अनुसंधान किया जाय तो राजस्थानी साहित्य में ऐसी अनेक कृतियाँ मिलेंगी। इस प्रकार की कृतियों में नागोर के 'राव इन्द्रसिंह री झमाळ' एक विशिष्ट कृति है।

इस कृति का महत्व इस कारण से और भी बढ जाता है क्योंकि इसका विषय केवल राजस्थान की आंतरिक राजनीति और संघर्ष से ही सम्बद्ध न होकर पूरे भारत की निर्णायक राजनीति पर प्रकाश डालता है।

इस काव्य-कृति का नायक राव इन्द्रसिंह नागोर के राव अमरसिंह का पौत्र था। यह घटना सर्वविदित है कि जोधपुर के महाराजा गजसिंह ने अपने बड़े (पाटवी) पुत्र अमरसिंह से रुष्ट होकर उसे जोधपुर की गद्दी से वंचित करते हुए बादशाह शाहजहाँ से अपने अच्छे सम्बन्धों का लाभ उठाकर उसे नागोर की जागीर दिलवाकर स्वतंत्र मनसब आदि दिलवा दिया और इस प्रकार उसे जोधपुर से अलग कर दिया। गजसिंह ने जीतेजी अपने छोटे लड़के जसवंतसिंह को गद्दी का हकदार घोषित किया और जब उसकी मृत्यु आगरा में हुई तो बादशाह ने जसवंतसिंह को तत्काल बुलाकर अपने हाथ से जोधपुर की राजगद्दी का टीका दिया।

इस घटना से ही स्पष्ट है कि अमरसिंह के मन में असंतोष व नैराश्य की अग्नि बराबर जलती रही। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि वह बड़ा वीर, साहसी और युद्धनिपुण व्यक्ति था। उसने शाहजहाँ के समय में अनेक बड़े युद्धों में भाग लिया और उसका मनसब बढते-बढते ४००० जात तक पहुँच गया था। पर इस असंतोष ने उसके दिमाग को असंतुलित कर दिया था और राजनीति से बढकर राजपूती-शान के लिए मर मिटने के

संस्कार उसके हृदय में प्रबल हो उठे। यही कारण था कि जब सलावतखाँ ने कुछ अपशब्द कहे तो उसने उसका सिर काट डाला और स्वयं भी लड़ता हुआ मारा गया। अमरसिंह का यह असंतोष उसके पुत्र रायसिंह और पौत्र इन्द्रसिंह में भी बराबर जाग्रत रहा। वे सदा अपने सही अधिकार को ध्यान में रखते हुए जोधपुर की गद्दी को पुनः प्राप्त करने के प्रति सचेष्ट रहे।

जब जसवंतसिंह की मृत्यु निःसंतान अवस्था में हो गई तो इन्द्रसिंह ने राज्य-प्राप्ति के प्रयास प्रारम्भ किये, पर जसवंतसिंह की गर्भवती रानी के अजीतसिंह नामक पुत्र पैदा हो जाने से यह आशा कुछ धूमिल पड़ी क्योंकि औरंगजेब के न चाहने पर भी मारवाड़ के प्रमुख सरदार—सोनग चांपावत, दुर्गादास, मुकनदास खीची आदि अजीतसिंह को ही शासक बनाना चाहते थे, यह जसवंतसिंह के प्रति उनकी व्यक्तिगत वफादारी थी, साथ ही वे इन्द्रसिंह के व्यवहार के प्रति संशयशील थे क्योंकि उन्हें शक था कि इन्द्रसिंह बादशाह के इशारों पर चलकर ही शासन करेगा और ऐसा करने में भूतपूर्व शासक के वफादार सेवकों के साथ वह दुर्व्यवहार भी कर सकता है और जनता को भी तबाह कर सकता है।

इतना होने पर भी इन्द्रसिंह ने अपने प्रयास बराबर जारी रखे और उसने जैसे-तैसे औरंगजेब को राजी कर जोधपुर की गद्दी हासिल की पर सरदारों ने उसे अधिक समय तक टिकने नहीं दिया। अजीतसिंह को गद्दी पर बिठाने के लिए दुर्गादास अदि ने लंबे समय तक संघर्ष किया और उस समय जो राजनैतिक दौर चला वह भारतीय इतिहास का एक ऐसा अध्ययन योग्य समय है जिसमें दुर्गादास की राजनैतिक सूझबूझ, त्याग, वीरता और बलिदान की एक विशिष्ट मानवीय प्रतिमा उस काल के क्षितिज पर उभर सकी।

औरंगजेब की मृत्यु के उपरांत अजीतसिंह ने फौरन जोधपुर पर अधिकार कर लिया पर तब से दिल्ली साम्राज्य की परिस्थितियाँ बड़ी अनिश्चित रही जिससे अजीतसिंह को जीवन भर संघर्ष करना पड़ा और इन अनिश्चितताओं के कारण ही इन्द्रसिंह भी बराबर प्रयत्नशील बना रहा। इसी प्रयत्न में उसके पुत्र मोहकमसिंह व मोहनसिंह बलिवेदी पर चढा दिये गये।

फरूखसियर के शासन-काल में दिल्ली साम्राज्य अजीब दौर से गुजरा। सैयद बन्धुओं ने अपनी शक्ति इतनी बढाली थी कि बादशाह नाममात्र का सम्राट रह गया था। एक भाई ने राजनीति की बाग संभाल ली तो दूसरे ने सेना की। जब फरूखसियर ने इस विवशता से मुक्त होने की कोशिश की तो उसे प्राणों से हाथ धोना पड़ा और उस समय अजीतसिंह और सवाई जयसिंह दोनों ने जो भूमिका निभाई वह निम्न राजनीति का एक उदाहरण बन कर रह गई।

समय अधिक दिनों तक सैयद बन्धुओ का साथ न दे सका और बादशाह मुहम्मद-शाह के शासनकाल में फिर उथल-पुथल मची। महाराजा अजीतसिंह सैयद बन्धुओं के पक्ष

में थे अतः इन्द्रसिंह का विरोधी खेमे में रहना उचित ही था पर इतिहास ने ऐसी करवट बदली कि सैयद बन्धुओं के अत्याचार, फर्रुखसियर की हत्या और स्वेच्छाचारिता की असीमता ने जनता के मन में उनके प्रति घृणा का भाव पैदा कर दिया और अतीत में उनकी चाहे जो सेवाएँ रही हों तखत के साथ उन्होंने जो छिछोरपन का व्यवहार किया वही इतिहास में आज जनता के लिये शेष रह गया है। स्वाभाविक है कि ऐसे पात्रों के विरोध में जब निजाममुलमुल्क खड़ा हुआ तो उसके चरित्र की दीप्ति दुगुनी हो गई और इन्द्रसिंह आदि उसके सहयोगियों का भी रुतबा बढ़ा। निजाम के साथ भयंकर युद्ध में राजस्थान के कई शासक अपनी परम्परागत राजनीति के वशीभूत काम आए जिनमें बूंदी का भीमसिंह हाडा, गजसिंह नरवरी, गोपालसिंह आदि का उल्लेख इस कृति में भी हुआ है। इनके अतिरिक्त अनेक मुसलमान अधिकारी भी मारे गये।

इन घटनाओं के द्रुतगति से बदलते हुए वात्यचक्र में लोभ के वशीभूत राजनीति के प्रपंच में अनेक लोगों ने क्रूरता, निर्दयता और निर्लज्जतापूर्ण अमानवीय व्यवहार किया जिसकी झलक भी कवि ने इस काव्य-कृति में स्थान-स्थान पर प्रकट की है। प्राचीन राजस्थानी काव्य में वीरता और साहस, धरती-प्रेम और स्वामिभक्ति को सुन्दर से सुन्दर उक्तियों से सजाकर प्रभावशाली अभिव्यक्ति देने वाली रचनाएँ तो अनेक हैं और उनकी तुलना में भारतीय भाषाओं की वीर रसात्मक कृतियाँ बड़ी ही फीकी लगती हैं परन्तु इस कृति में वीरता और शौर्य, परम्परागत मान-सम्मान और स्वामिभक्ति जिस प्रकार परिस्थितियों की धधकती अग्नि में जलते हुए अपनी विवशता की चटपटाहट का परिचय देते हैं वह अपने आप में अद्वितीय है। विषय-वस्तु को देखते हुए इस काव्य-कृति का कलेवर बहुत छोटा है पर उसमें भी कथात्मक भूमि से ऊपर उठ कर कवि ने जिस मानवीय दिगंत को छुआ है वह वास्तव में अनूठा और स्पृहणीय है। कुछ उद्धरण देखिये :—

लालच कवण न लोभिया नर सुर दांणव नाग
तिसण गेडे सगाज ही आवत वधै अथाग।
आवत वधै अथाग आव नित घट हुवै
जळ अंजळि रा जेम क छिन छिन छीजवै
आंन दिस्ट भगवांन न जांणै गह गरब
संपत राज समाज छूटै पल में सरब॥

(छन्द—३५)

अई दइ तुछ आव में कई उपाव करत
नर सिर मरण जांणही आसा अमर धरंत।
आसा अमर धरंत ममता नह मुड़ै
देखौ कळजुग पूर क दिन दिन बोह चढ़ै

पिता धणी परमेस कपट त्यां सूं करै
कहर करै क्रम करज गरज को ना सरै ॥

(छन्द—३७)

यद्यपि इस कृति का शीर्षक "राव इन्द्रसिंह री झमाळ" है परन्तु इसमें इन्द्रसिंह की वीरता आदि का उल्लेख नाममात्र का ही है उसका व्यक्तित्व निजामुलमुल्क के विराट व्यक्तित्व में छिप गया है और कवि ने उसको ऊपर उठाने का प्रयास भी नहीं किया है क्योंकि उसकी कविता का बहाव बहुत बड़े घटनाचक्र में से निकल कर अंत में निजाम पर एकत्रित हो गया है और निजाम की विजय और उसकी सफलता में ही उसके साथियों की सफलता को मान कर वह मौन हो गया है। इस प्रकार इस पूरी उथल-पुथल में किस किस की हार और जीत अज्ञात रूप में किस किसके सुख दुख और उत्थान-पतन का कारण बन गई यह विचार सापेक्षता इस में बहुत दूर तक घुली हुई है जिसे इतिहास का गम्भीर पाठक ही समझ सकता है और संवेदनशील हृदय ही महसूस कर सकता है।

परन्तु इतिहास के पृष्ठों पर यह तथ्य अंकित रह गया है कि इतने प्रयत्नों और इतने बलिदानों के बावजूद भी इन्द्रसिंह जोधपुर का राज्य प्राप्त नहीं कर सका, उल्टा उसे नागोर से भी हाथ धोना पड़ा और इधर अजीतसिंह का अन्त करके भी उसके वंशज जोधपुर के अधिकारी बने रहे। इस प्रकार अमरसिंह के वंशजों की हकदारी जोधपुर राज्य के इतिहास में बेवफादारी बन गई और उसकी तीन पीढी के प्रयास विफलता की गर्द में खो गये।

ऐसे राजनैतिक वात्यचक्र को अपनी पृष्ठभूमि में समेटने वाली इस काव्य कृति का डिंगल की वीर काव्य परम्परा में अपना महत्व है। हजारों गीतों, दोहों व विविध छन्दों में डिंगल काव्य जहाँ उद्वेलित हुआ है वहाँ उनमें अनुभूति जन्य सुन्दर वीचियों का बहुत बड़ा कोश अपनी कान्ति और ओज की भव्य आभा से राजस्थानी साहित्य को उजागर किये हुए है और उस कोश में इस कृति की आभा मिल जाने से निश्चय ही उसकी कान्ति में वृद्धि हुई है। भाषा, शैली और अभिव्यक्तिगत नैपुण्य की दृष्टि से कुछ ही उद्धरण यहाँ देना पर्याप्त होगा —

औरंगजेब की मृत्यु के उपरांत राज्य की अव्यवस्था—

पतसाई ऊथल पथल अवरंग पछै अनेक
केता रंग दिल्ली किया येके संग सा येक।
येके संग सा येक दिल्ली वर बोह धरै
अदल वरतण हार कोइक अवतरै

चाक चढै चक च्यारि दुनिवर बोह चलै
अंबाकियां अपार धरा सोह धूंकळै ।।

(छन्द—१७)

चक च्यारौ लग च्याडि चक हक नह हानै कोय
संक नहीं पतसाह री जर घोसै तकजोय ।
जर घोसै तकजोय सकोई जड़िया
संकिया साहूकार वपार सु छांडिया
किण सूं करै पुकार क ऊपर कुण करै
रुकिया वहता राह क पंथी पथ मरै ।।

(छन्द—१५)

शासन-शक्ति को संतुलित मस्तिष्क से वरण करने सम्बन्धी भावाभिव्यक्ति —

जग काया धारी जिता रीता माया रीत
कोइक जे बिरला करै परमेसुर सूं प्रीत ।
परमेसुर सूं प्रीत थांत कर दक्ष ही
देह धरी रौ सांच भजन तप दक्ष ही
सुपनंतर संसार संत जांणै सही
जळ बुदबुदा जही बिलावै वेग ही ।।

(छन्द—२६)

दोय घोड़ां चढ दौड़वै वे धारक अवतार
भक्ति राज भेळा करै जीपै सो जमवार ।
जीपै सो जमवार संसारह मंझली
रीझ मौज पुन करै मने पूरब रळी
आयां दीधी आय साय से ले गया
जिकै जमारौ जीत कड़ाका दे गया ।।

(छन्द—३०)

मनुष्य की संस्कारजन्य प्रवृत्ति पर सैयदों को लेकर कटु व्यंग—

पंस करहि पावतां विसहर जहर बधंत
कोटि जतन जो कीजियै परकत नह पलटंत ।
परकत नह पलटंत निसल सन नीवड़ै
नेट विनादी हूंत क षता नह पड़ै

कदे न सैंदां विल्ली उजळी करी
फररक री पारीष नीवड़ी कूटरी ॥

(छन्द—३८)

सेना का शस्त्र सज्जित होना व प्रयाण—

घस फौजां चढि घत्तिया चौरंग श्रण चालांह
षळ केतां जरदां बंधां झळकंतां भालांह ।
झळकंतां भालांह पड़ै उपडांषिया
ऊपड़ रज गैणाग श्ररक रथ टांकिया
कळह करेवा काज श्राज रा कोपिया
गिर झंगर हो गरद मरद यम श्रोपिया ॥

(छन्द—४२)

श्रंतिम पंक्ति में गर्द से आच्छादित योद्धाश्रों को वनस्पती से ढके पर्वतों की उपमा देकर कवि ने मौलिक सूझ-बूझ का परिचय दिया है ।

निजाम की दुर्दमनीय दृढ़ता श्रौर इन्द्रसिंह जैसे साथी का सहयोग—

बेली श्रला नबाब रै इंद बेली श्रारांण
पतसाई सूं पाधरै कर झल्ली केवांण ।
कर झल्ली केवांण जबां यम श्रक्षिया
सजदा सैदां हूंत कदे नम न किया
ऊंचा श्रत श्रसमांन जमीं सक लेखियै
दै जिना रहमांन सुत नां देखियै ॥

(छन्द—४६)

धवल वैल की तरह परिस्थितियों के कीचड़ से दिल्ली साम्राज्य का रथ निकालने वाले निजाम की आत्मशक्ति—

नीची जूसर कर नहीं धमळा ऊंची धार
कळियो तूं ईज काढसी भर रथ दिल्ली भार ।
भर रथ दिल्ली भार क कळियो तूं कढै
है धर जूपण भार श्रमै मत श्रोछुड़ै
बांमी खंचण हार क भांमी तो भुजां
बळ कर धमळ निबाब निजामल धर लजां ॥

(छन्द—४९)

समर की भयंकरता का सजीव चित्रण—

> धँधीगर अत धात मद वहता असमांन
> थापलिया धूरण हथां पूतारँ पिलबान ।
> पूतारँ पिलवांन गँघूबं गज घड़ा
> सज भड़ सार छतीस जरद्दां जड़ी कड़ा
> काळी कांठळ कहर बीज खग बळ किया
> धरा रह्या पग रोप क कायर थळकिया ॥

(छन्द—५२)

> बळ बळ बीजूबळ बळक भळहळ आतस झाळ
> धार धंधाधर कज धहै रस लूधा रोवाळ ।
> रस लूधा रोवाळ चळता काळ रुख
> मंडै अरावां मोहीर सराबां चोळ मुख
> तूटो टंक अढारन दूजी धार है
> मुड़ै अपूठी मूठ क वडी मार है ॥

(छन्द—५४)

भीमसिंह हाडा और गजसिंह नरवरी जैसे वीरों का निजाम रूपी काले सर्प के हाथों मृत्यु के भेंट चढ़ना—

> काळौ जिम चंपियैं कसण फिरियौ फुण धग फेर
> तिण बेळा सँदां तणा ढाहि किया वळ ढेर ।
> ढाहि किया वळ ढेर सँदांना वज्जिया
> थया दिल्ली थंम विरुद भुजां तो छज्जिया
> धाड़ निजामलमुल्क धाड़ मुगलां घड़ौ
> धाय दिलावर भीम गजण नैं रिण धड़ौ ॥

(छन्द—८२)

वीर का वीरगति में अटूट विश्वास ही कर्तव्यपरायणता की चरम सीमा—

> मरै न सूरा मौत बिन कायर अमर न कोय
> काची काया कारणैं मत भूलौ जिन कोय ।
> मत भूलौ जिन कोय क काया काच सी
> राखी जतन न रहै नवस जद भाजसी
> सूर धरैं विसवास रहसी रिण सुथिर
> कायर लांछण लाय मरेसी जाय घर ॥

(छन्द—६३)

ओलँ पौह वृत आपणा देतो कज भाराथ
सीस समापै सीलियौ सारौ हेकण साथ ।
सारौ हेकण साथ क सीस दे सीलियौ
सोहड़ां सांम सनाह बिरद सांचौ कियौ
राषीजँ रजपूत राड़ दिन वासतँ
मर सिर दे रिण मांह क सूर सज मतँ(लँ) ।।

(छन्द—७४)

क्षात्र धर्म की आदर्शोन्मुख अभिव्यक्ति भी देखिये—

षत्री वंस षित रस लियै सेवै प्रजा सरब्ब
मरण देण मारणा करड़ौ धणौ किसब्ब ।
करड़ौ घणौ किसब्ब भरण अर दियण रौ
जुध अवसर जुड़ियांह षाग दन मन षरौ
सांच सील साहंस सत संग लेषिये
प्रथी भुगतण हार परम अंस पेषिये ।।

(छन्द—८०)

इस प्रकार इस समूचे काव्य में बड़े साधे हुए ढंग से वस्तु-वर्णन करते हुए कवि ने अनावश्यक कथा विस्तार न कर कविता को इतिवृत्तात्मकता से बचा लिया है। परन्तु साथ ही उसने अपने काव्य-कौशल में-डिंगल की वीर-काव्य परम्परा की पूरी जानकारी का परिचय भी स्थल-स्थल पर दिया है और कहीं-कहीं मौलिक सूझबूझ का भी प्रयोग किया है।

इस कृति की एक ही प्रति हमारे संस्थान के ग्रंथांक ९७२२ में लिपिबद्ध है। अन्य कोई प्रति प्रयत्न करने पर भी हमारे देखने में नहीं आई अतः एक प्रति के आधार पर ही इसका सम्पादन किया गया है। कृति के साथ लेखक का नाम अंकित नहीं है परन्तु भदोरा ग्राम (जिला नागोर) के श्री नारायणसिंह सांदू के द्वारा यह जानकारी उसके वयोवृद्ध पितामह हेमदानजी से मिली कि इसके रचयिता सबलजी सांदू हैं। उन्हें इस कृति के अनेक छंद तथा अन्य घटनाओं के गीत भी याद हैं। कवि सांदुवों की रामावत शाखा का चारण था और नागोर परगने के शिव ग्राम का निवासी था। उसने जिस संतुलित ढंग से घटनाओं का वर्णन किया है इस से वह इन्द्रसिंह नागोर का समकालीन भी समझा जा सकता है। कवि के अभिव्यक्ति कौशल को देखते हुए वह अपने समय का एक श्रेष्ठ कवि होना चाहिए। इस कृति के ऐतिहासिक महत्व को उजागर करने के लिए अंत में कुछ ऐतिहासिक टिप्पणियाँ भी दे दी गई हैं, आशा है इतिहास और साहित्य के विद्यार्थियों के लिये उपयोगी सिद्ध होंगी।

—नारायणसिंह भाटी

अथ झमाल लिख्यते

१

सरसत गणपति होय प्रसंन्न दीजै सत वरदांन
गाऊँ इन्द राजा गुणे राजांपत राजांन ।
राजांपत राजान वडे सब अवतरे
सहजां जुजठल भोज सिवर समसत धरे
दिल ऊजला दातार षत्री ध्रम साहियां
रायांसींग सुजाव वर्णै सिंघ राइयां ॥

२

कंवरपणै झिलियौ कहर नरद सहर नागांण
पहर पहर रीझां समप वेहद लिया वषांण ।
वेहद लिया वषांण हद मांणग हवा
सांईना उमराव हजूरी मन सवां
रूपग राग सिकार क लाहा बोह लिया
पित रायसिंघ सुजाव षांत कर खेलिया ॥

---

१. शब्दार्थ—

इन्द—नागोर का शासक राव इन्द्रसिंह. **राजांपत**—राजाओं का पति, अनेक राजाओं में श्रेष्ठ. **अवतरे**—अवतरित हुए. **सहजां**—शाहजहाँ. **जुजठळ**—युधिष्ठिर. **ऊजळा**—उज्ज्वल. **दातार**—दानी. **षत्रीध्रम**—क्षात्र धर्म. **साहियां**—धारण करने वाले, शोभायमान होने वाले. **रायांसींग सुजाव**—नागोर के राव रायसिंह का पुत्र. **राइयां**—राजाओं का.

२. शब्दार्थ—

कंवरपणै—युवराज पद पर. **झिलियौ**—शोभायमान हुआ. **कहर**—वीर, शक्तिशाली. **नागांण**—नागोर. **रीझां**—दांन, इनाम. **समप**—देकर. **वषांण**—प्रशंसा. **मांणग**—आनन्द लेने वाला, भोगने वाला. **हवा**—हुए. **हजूरी**—नौकर. **मन सवां**—सीधे मन वाले. **रूपक**—काव्य, गीतादि. **लाहा**—आनन्द. **षांत**—वैशिष्ट्यपूर्ण, कलात्मक.

३

पित वैकुंठ पधारीयां जस रथ ध्रम लजियार
धुर जूपै भर झल्लिया सोह आषै संसार।
सोह आषै संसार क भार सामाहिया
दिषण बहादर नचीता रिण किया
अभंग यसो आपाण दुनी दरसाविया
साझण षलां संग्राम सुयस सरसाविया ॥

४

अमर सलावत मारियौ अणियाली उर पोय
साहजहां अंबखास विच जाक हिया रंग जोय।
जाक हिया रंग जोय अमर जम ईषिया
उर हूंता उतार असपति धिषिया
उरजण पूठै आय गौड़ षग वाहियां
सनमुष विढण विचार तेग नह साहियां ॥

---

३. शब्दार्थ—

जस —यश. **ध्रम**—धर्म. **लजियार**—लज्जित होने लगा. **धुर**—धुरे के. **जूपै**—जुत कर, लग कर. **भर झल्लिया**—बोझ को वहन किया. **सोह**—समस्त. **आषै**—कहता है. **सामाहिया**—संभाला, झेला. **दिषण**—दक्षिणी प्रान्तों में. **नचीता**—निश्चिंत होकर. **अभंग**—न टूटने वाला, अपार. **यसो**—ऐसा. **आपांण**—बल. **दुनी**—संसार. **साझण**—सजने को, सज कर. **षळां**—दुश्मनों से.

४. शब्दार्थ—

अमर—नागोर का राव अमरसिंह. **सलावत**—सलावतखान. **अणियाळी**—कटारी. **उर पोय**—हृदय में भौंक कर. **अंब खास**—मुख्य दरबार **जाक**—चकित होकर, जिस का. **हिया**—हृदय. **जम**—यमराज. **ईखिया**—दिखाई दिया. **असपति**—बादशाह. **धिषिया**—खिसक गया. **उरजण**—अर्जुन गौड़. **पूठै आय**—पीछे आकर. **विढण**—युद्ध करने को. **न साहिया**—उठा न सका, हिम्मत न कर सका.

५

सींहां सापुरषां तणी जोह न पाली जाय
कांन अजा रौ काटियौ कमंध कटारी वाय ।
कमंध कटारी वाय असुर बोह ऊथलै
हुक्म साह दरगाह तणा भड़ सह हलै
अमर विरुतौ सीह मरै निठ मारियौ
बगसी चूका बोल सलावत मारियौ ॥

६

दिषण धरा भाणौ दुगम लड़ि नाणौ बल्लाल
असी हजारां ऊपरै त्रहिया जैत त्रंमाल ।
त्रहिया जैत त्रंमाल लंकाल गराजिया
दिषणी दल गैजूह साह बल भंजिया
रासै सूजा रहचि विरुद उजवालिया
गरब साहजादां त्रहु तणा रिण गालिया ॥

---

५. शब्दार्थ—

सापुरषां—सुयोग्य व्यक्तियों. **तणी**—की. **जोह**—वार, चेष्टा. **पाली**—व्यर्थ. **अजा**—अर्जुन गौड़. **कमंध**—वीर, राठौड़. **वाय**—चलाकर. **असुर**—मुगल योद्धा. **बोह**—बहुत से. **ऊथळै**—धराशायी करके. **दरगाह**—राज्य-दरबार. **भड़**—वीर. **हलै**—चल-विचल हो गये. **निठ**—बड़ी मुश्किल से. **बगसी**—बक्षी.

६. शब्दार्थ—

दुगम—दुर्गम. **असी हजारां ऊपरै**—अस्सी हजार फौज पर. **त्रहिया**—बजे. **जैत**—जीत. **त्रंमाळ**—नगारे. **गैजूह**—हाथियों का झुण्ड. **सूजा**—शुजा. **रहचि**—युद्ध करके. **उजवाळिया**—उज्ज्वल किया. **गरब**—गर्व. **त्रहु**—तीनों. **रिण**—युद्ध. **गाळिया**—विगलित किया.

७

वाकै औरंगजेब रै आजम सूं कर आंट
इंद मुरड़ आया अभंग वेढक अणियां बांट ।
वेढक अणियां बांट थाट के ठेल ही
काल् चाल् कुण गहै झाल् कुण झेलही
आसंग आजम तणी इन्द नह आविया
पड़गाहण पतसाह क बिरद बुलाविया ।।

८

धरा सदा नरवेधनी चाल्ा नित चाहंत
भिड़ै कटावै भाइयां वल् पित पूत विढ़ंत ।
वल् पित पूत विढ़ंत पियारा राज कज
कीधो गोत कंदन अरुजन चांप सज
आगे दाणव देव किताही आहुड़ै
ले परब्रह्म अवतार धरा कारण लड़ै ।।

---

७. शब्दार्थ—

वाकै—घटना. **आंट**—विरोध. इंद—राव इन्द्रसिंह. **मुरड़ आया**—निकल कर आ गया. **वेढक**—युद्ध में से. **अणियां बांट**—अपनी सेना की टुकड़ी लेकर. **थाट**—समूह, सेना. **चाळ**—पल्ला. **कुण**—कौन. **गहै**—पकड़े. **झाळ**-ज्वाला. **पड़ गाहण**—युद्ध ?

८. शब्दार्थ—

नर वेधनी—नरों का नाश करने वाली. **चाळा**—युद्ध. **भाइयां**—भाइयों को. **वळ**—और. **विढंत**—लड़ते हैं. **पियारा**—प्यारे. **कदंन**—नाश. **अरुजन**—अर्जुन. **चांप**—धनुष. **आहुड़ै**—भिड़े, युद्धोन्मत्त हुए. **कारण**—लिये.

९

मोहकम थाणै मेड़तै ऊदै भेद उपाय
दौड़ावै जालोर दिस मिल उरजण पिण मांह ।
मिल उरजण पिण मांह मोहकम आंणिया
अनड़ां पैठा अजन चूक पहचांणिया
करि जालोर मुकाम दिस चहुँ पड़ दहल
जाणै चूका सीह जरी धरीयै दुझल ॥

१०

दल मेले पल दापवै बोहोली पूरै वेल
आयौ दूनाड़ै अजन पागां षेलण पेल ।
पागां षेलण पेल मोहोकम नह डिगै
जुध पड़ रीठ नत्रीठ ज्वाल झालां जगै
ऊदौ अरजणसींग अमल कज ऊतरै
वाहुड़ियौ वाहुत हय गैवर घिरै ॥

---

९. शब्दार्थ—

मोहकम—राव इन्द्रसिंह का पुत्र, मोहकमसिंह. **थाणै मेड़तै**—मेड़ते के थाने पर. **ऊदै**—उदैसिंह. **भेद उपाय**—भेद बतलाकर. **दिस**—तरफ. **उरजन**—अर्जुनसिंह. **आंणिया**—लेकर आये. **अनड़ां**—पहाड़ों में. **अजन**—(महाराजा) अजीतसिंह. **चूक**—धोखा, धोखे से मारना. **दुझल**—तलवार.

१०. शब्दार्थ—

दळ—फौज. **षळ**—दुश्मन. **बोहोळी**—अत्यधिक. **दूनाड़ै**—दुनाड़ै नामक ग्राम में. **अजन**—अजीतसिंह. **पागां**—तलवार से. **रीठ**—शस्त्रों का झड़ी. **नत्रीठ**—वीर, पौरुषपूर्ण. **कज**—लिये. **वाहुड़ियौ**—पीछे मुड़ा. **गैवर**—हाथी.

११

अवरंग म्रत अगजीत री वध तप तेज बिनांण
आभै थांभा ओडवै होय बोझल हिंदवांण।
होय बोझल हिंदवांण दाढाळां पड़ दहल
सांभर अर डिडवांण अजै कटकड़ अमल
षेध मोहकम षटक उवर मझ नह षवै
हसती आंकस हटक मसत ही मांनवै ॥

१२

दळ बळ नह सजियौ दुगम छळ करि छेतरियौह
जाय दिली बिली जिही जुड़ अमरै जरियौह।
जुड़ अमरै जरियौह मोहकम मयंद नै
ग्रासै मूसा काळ पहुतौ गयंद नै
सांई गम अगम सुगम नह जांणियै
अइयौ लेख अलेख सु देख पिछांणियै ॥

---

११. **शब्दार्थ—**

अवरंग—औरंगजेब बादशाह. **म्रत**—मरने पर. **अगजीत**—अजीतसिंह. **वध**—वृद्धि को प्राप्त होता है. **बिनांण**—रुतबा. **आभै**—आकाश. **थांभा**—स्तंभ. **ओडवै**—लगाता है. **दाढाळां**—सूअर, सूअर के समान वीर. **दहल**—शंकित होना, भयभीत होना. **अजै**—अजीतसिंह. **कटकड़**—फौजें चढाकर. **अमल**—अपने राज्याधिकार का दस्तूर. **षेध**—कष्ट. **षटक**—खटका. **उवर**—हृदय. **षवै**—बरदास्त करना. **आंकस**—अंकुश.

१२. **शब्दार्थ—**

दुगम—विकट, दुर्गम. **छेतरियौह**—धोखे का व्यवहार किया. **जुड़**—मिलकर. **अमरै**—अमरसिंह. **मयंद**—हाथी. **ग्रासै**—ग्रास करता है. **काळ**—काल को. **पहुतौ**—पहुँचा, मुहावरा-मार डालना. **सांई**—ईश्वर. **लेख**—विधाता का लेख.

१३

पातसाही पतली पड़ी खगण अवरंगसाह
मछगलागल मंडणा राह छंडै दुय राह ।
राह छंडै दुय राह क ऊजड़ चल्लिया
पतसाहां विण अवर रहै किण पल्लिया
राजा राव नबाब सवां लाज न रष ही
भष अभष विचार नकुं स्रब भष ही ॥

१४

मन धारै दूणी मती कर गरदनी कसीस
आरंभ कर पड़ आविया सबलां निबलां सीस ।
सबलां निबलां सीस कटकी नित करै
कांण दिली री काय न क्युं मन में धरै
असपत न को अमोर क पागां ओट है
मालव धरगुजरात क दिषणी भल वहै ॥

---

१३. शब्दार्थ—

पतसाही—बादशाहत. **पतळी पड़ी**—दुर्बल हो गई. **मछगळागळ**—शक्ति और सम्पन्नता के छके हुए. **राह छंडै**—राज्य के कायदे का रास्ता छोड़ दिया. **दुय राह**—दोनों पक्ष, दोनों ओर से. **ऊजड़**—उजाड़, बिना रास्ते के. **पल्लिया**—बरजे हुए. **सवां**—आधार पर. **भष अभष विचार**—उचित अनुचित का विचार. **नकुं**—कोई नहीं. **स्रब**—सर्व.

१४. शब्दार्थ—

दूणी—दुगनी. **गरदनी कसीस**—मारने की अभिलाषा. **पड़ आविया**—चढ आये. **सबळा**—सबल. **सीस**—सिर पर. **कटकी**—गुस्सा, चढाई. **कांण**—कायदा. **न क्युं**—थोड़ी भी. **असपत**—बादशाह. **दिषणी**—दक्षिण के लोग.

१५

चक च्यारौ लग च्याडि चक हक नह हानै कोय
संक नहीं पतसाह री जर षोसै तकजोय ।
जर षोसै तक जोय सकोई जड़िया
संकिया साहूकार वपार सु छंडिया
किण सूं करै पुकार क ऊपर कुण करै
रुकिया वहता राह क पंथी पथ मरै ॥

१६

धरती माथौ घूणियौ ऊथप चिगथां आंण
पतसाई पूरी हुई पीढी सात प्रमांण ।
पीढी सात प्रमांण हुवौ तप तेज हद
जोषमियौ अवरंग करै बहु राज जद
पीर चोईसां तणी करामात पलटै
घरि चिगथां पड़ि वेध किताई मर घटै ॥

---

१५. **शब्दार्थ**—

चक—पृथ्वी खंड. **हानै**—वश में. **संक**—शंका. **जर**—धन. **षोसै**—लूटते हैं. **तक**—ताक कर. **सकोई**—सभी. **जड़िया**—लूट के लिये उन्मत्त हुए. **वपार**—व्यौपार. **छंडिया**—छोड़ दिया. **ऊपर**—रक्षा. **पंथी**—पथिक. **पथ मरै**—पथ में ही मारे जाते हैं.

१६. **शब्दार्थ**—

माथौ घूणियौ—परिवर्तन की सूचना दी. **ऊथप**—विस्थापन्न. **चिगथां**—मुगल. **प्रमांण**—सात पीढी पूरी होने तक. **तणी**—की. **पळटै**—पलटती है. **वेध**—विरोध, विघटन. **किताई**—कितने ही. **मर घटै**—मर मर कर समाप्त हो रहे हैं.

१७

पतसाई ऊथल पथल अवरंग पछै अनेक
केता रंग दिल्ली किया येके संग सा येक ।
येके संग सा येक दिल्ली वर बोह धरै
अदल वरतरा हार कोइक अवतरै
चाक चढै चक च्यारि दुनि वर बोह चलै
अैवाकियां अपार धरा सोह धूंकलै ॥

१८

सैदां फररकसेन रै पड़ो जुड़ करि पतसाह
जोम अमांमै झलिया धोम लगा दोय राह ।
धोम लगा दोय राह धरा पुड़ धड़हड़ै
इंद राजा अजमाल धरा कज आहुड़ै
पतसाई फुरमाण लूण कजि लेषिया
डेरा इन्द दरकूच दिल्ली सनमुष दिया ॥

---

१७. शब्दार्थ—

उथल पथल—उथल पुथल. **अवरंग**—बादशाह औरंगजेब. **पछै**—बाद में. **केता**—कितने ही. **येके**—एक. **वर**—पति. **बोह**—बहुत से. **अदल**—न्याय. **कोइक**—कोई सा ही. **चक च्यारि**—चारों खण्ड. **दुनि**—दुनियाँ. **चलै**—संसार से विदा होते हैं. **अंवाकियां**—ऐराकी घोड़ों से. **धूंकळै**—रौंदते हैं, युद्ध करते हैं.

१८. शब्दार्थ—

सैदां—सैयद बन्धु. **अमांमै**—अत्यधिक. **धोम लगा**—द्वेष के धुंए में उद्धत. **धरा पुड़**—धरती के पर्त. **आहुड़ै**—युद्ध के लिए तत्पर होते हैं. **लूण कजि**—नमक का बदला चुकाने को. **लेखिया**—लिखे.

१६

मोहण मांणीगर कंवर मतवालां रौ मौड़
सूरत दत इन्दसाह रौ रायजादो राठौड़ ।
रायजादो राठौड़ निसावत लावियौ
अजमल हुकम अलोप दुरजन आवियौ
सूतो जागै सीह क षागां वाजियां
द्राह छछोहां हिक्क क लोहां साझियां ॥

२०

दिलो जाय दाषल हुवै बषत बिलंद जिण बेर
अस दे मुनसफ इंद नूं फररक हुकमो फेर ।
फररक हुकमी फेर सैद नहसां सहै
दुमणा दुसमण जिही क चाकर चित चहै
मनि बंधै मगरूर धनी हुय छक धरै
दुइ तषत रो हौंस सांमध्रम परहरै ॥

---

१६. **शब्दार्थ—**

मोहण—मोहनसिंह. **मांणीगर**—आनन्द का उपभोग करने वाला. **मौड**—सिर मौर. **दत**—दान देने में. **अलोप**—उल्लंघन करके. **षागां वाजियां**—तलवारें बजने पर. **द्राह**—भय से दुश्मन में घबराहट पैदा होना. **लोहां साझियां**—शस्त्रों से सज्जित होने पर.

२०. **शब्दार्थ—**

दाषल—प्रविष्ट. **बषत**—समय. **विलंद**—वीर. **जिण बेर** जिस समय. **मुनसफ**—मनसब. **फररक**—फरुकशियर. **सैद**—सैयद बन्धु. **नहसां**—नष्ट करें. **सहै**—सभी. **दुमणा**—चिंतित, उदास. **चित चहै**—चित्त के अनुकूल. **मनि**—मन. **दुइ**—दोनों, सैयद बन्धु. **हौंस**—उत्कट इच्छा. **सांमध्रम**— स्वामि धर्म. **परहरै**— त्याग देते हैं.

२१

सैदां फररकसेर रै परी पड़ी चित षांत
दाव विचारै दहुं दिसा मिलै न मन किण भांत ।
मिलै न मन किण भांत दाव वण दहुं दिसा
विगड़ेसी आ वत्त सही वीसे विसा
अजमल तेड़ हजूर साह यम अवचरै
मारौ षां अवदूल मतौ धरियां षरै ॥

२२

हसनअली फौजां हली दिल्ली दिसी दुगंम
आयौ सुज मसलत असी कियौ न कोय मुकांम ।
कियौ न कोय मुकांम अलंग पड़ आवियौ
दिषण सूं दरकूच दिली दरसावियौ
सैंद अमांमं साथ साह उर सल्लिया
होय आवइ जंग सको धर हल्लिया ॥

---

२१. शब्दार्थ—

षरी—पक्की. **षांत**—अंतर, बैर भाव. **दाव**—अवसर. **विगड़ेसी**—विगड़ेगी. **वत्त**—बात. **वीसे विसा**—निश्चय ही. **अजमल**—अजीतसिंह. **तेड़**—बुला कर. **अवचरै**—कहता है. **अबदूल**—अब्दुल्ला खाँ. **मतो**—निश्चय, विचार. **षरै**—पक्का.

२२. शब्दार्थ—

हसनअली—अब्दुल्ला खाँ का भाई. **हली**—चली. **मसलत**—सलाह. **असी**—ऐसी. **मुकांम**—ठहराव, पड़ाव. **अलंग**—बहुत दूरी से, निरंतर चलकर. **दरसावियौ**—प्रकट हुआ. **अमांमं**—अत्यधिक. **सल्लिया**—सालने लगे. **सको**—सभी.

२३

मगज अमांमै धार मन दिल्ली दमांमा देह
पौह फाटी आमेर पति कूरम कूच करेह ।
कूरम कूच करे अरेहज आवियौ
सैदां टलियौ साल भलौ मन भावियौ
उर सूं गिला उतार षपै निठ षेसियौ
हसनअली अब्दूल तणा द्रहे हियौ ।।

२४

आंबेरौ औ ठांम दिली जौं लौं कर जैसाह
सैदां दांव संभालियौ पकड़ेवा पतसाह ।
पकड़ेवा पतसाह क चूक विचारियौ
धरिवा ढिल्ली छतर मतौ उर धारियौ
पतसाई दी थकी षुदाई पाइयै
आसा अवलाषांह व्रथा बधाइयै ।।

---

२३. **शब्दार्थ—**

दमांमा—युद्ध के वाद्य. **पौह फाटी**—प्रभात होने लगा. **आमेर पति**—सवाई जयसिंह. **अरेहज**—बिना लड़े भिड़े. **टळियौ**—टल गया. **षपै**—प्रयत्न करता है. **निठ**—कठिनाई से. **द्रहे**—जलता है. **हियौ**—हृदय.

२४. **शब्दार्थ—**

आंबेरौ—आमेर पति, सवाई जयसिंह. **पकड़ेवा**—पकड़ने को, कैद करने को. **चूक**—दगा. **ढिल्ली**—दिल्ली. **छतर**—छत्र. **मतौ**—इरादा. **अवलाषांह**—अभिलाषाएँ. **व्रथा**—व्यर्थ.

२५

सुर नर दांणव नाग सै धर वर के धरियाह
तरवर केरा पांन ज्यूं पाका परिहरियाह ।
पाका परिहरियाह नवा फिर नीसरै
आयै जाय अनेक अेक नह आदरै
बार तार वप वेस क नित प्रत नह रहै
बरणक बादल छांह जिही चंचल वहै ॥

२६

धरा नवल्ला वर धरै करै नहीं थिर कोय
सैणप मन धारै सरब होतब होय स होय ।
होतब होय स होय टलै किम टालिया
नह जिण मांह सनेह बेह अंक वालिया
अंकां लागा आण क बंका दिन फिरै
हुई तपस्या हीण क आलम दिन फिरै ॥

---

२५. शब्दार्थ—

धर वर—धरती के वर. **के**—अनेक. **धरियाह**—धारण किये. **केरा**—के. **पांन**—पत्ते. **पाका**—पके हुए. **परहरियाह**—झड़ गये. **नीसरै**—निकल आते हैं. **आदरै**—अेक को भी हृदय में धारण नहीं करती. **बार**—अनुकूल समय. **तार**—मौका, उपयुक्त अवसर. **वप**—शरीर. **वेस**—उम्र. **बरण**—रंग.

२६. शब्दार्थ—

नवल्ला—नए-नए. **थिर**—स्थायी. **सैणप**—समझदारी. **टाळिया**—टालने से. **होतब**—होनहार. **बेह**—विधाता. **अंक**—लेख. **वाळिया**—लिखे, अंकित किया. **बंका**—शक्तिशाली. **हीण**—हीन. **आलम**—आलम पनाह, बादशाह के.

२७

कल़ नारी धारो किता प्यारो पतसाहांह
बारी बारी बोलवै दारी दोय राहांह।
दारी दोय राहांह दिली रंग दाषिया
भोगव के भरतार अपार सु भाषिया
चाल़ागारी नार किणी संग नह चलै
अषनकंवारी अजे कितां लागो पलै ॥

२८

इण धरती रै ऊपरा वरती केती वार
नर तीं थिर को न रह्यौ सुपनंतर संसार।
सुपनंतर संसार क काया कारमो
लीजै जस ध्रम लाह क कीजै नह कमी
राय रंक सुरतांण नहीं नर देह थिर
करै तिकूं सुकरथ सहन वहल कहर ॥

---

२७. शब्दार्थ—

दारी—स्त्री. **बोळवै**—समाप्त कर देती है. **दाषिया**—कहे, दिये. **भोगव**—भोगें. **चाळागारी**—कपट युक्त. **अषनकंवारी**—अक्षत योनि वाली, पूर्णतया कंवारी. **कितां**—कितने ही. **पलै**—पल्लू, छेहड़ा.

२८. शब्दार्थ—

वरती—व्यतीत हुई. **केती**—कितनी ही. **वार**—समय. **तीं**—जिस पर. **सुपनंतर**-स्वप्न के समान. **कारमी**—कर्म की सीमाओं में लिप्त. **ध्रम**—धर्म. **लाह**—लाभ. **सुकरथ**—सुकृत्य.

२९

जग काया धारी जिता रीता माया रीत
कोइक जे बिरला करै परमेसुर सूं प्रीत ।
परमेसुर सूं प्रीत पांत कर दक्ख हो
देह धरी रौ सांच भजन तप दक्ख हो
सुपनंतर संसार संत जांणै सही
जल बुदबुदा जही बिलावै वेग हो ॥

३०

दोय घोड़ां चढ दौड़वै वे धारक असवार
भक्ति राज भेला करै जीपै सो जमवार ।
जीपै सो जमवार संसारह मंझली
रीझ मौज पुन करै मने पूरब रली
आचां दीधी आथ साथ सैं ले गया
जिकै जमारौ जीत कड़ाका दे गया ॥

---

२९. शब्दार्थ—

जिता—जितने भी. **रीता**—समाप्त हो गये. **बिरला**—विरले. **पांत-कर**—प्रयत्न करके, लगन रख कर. **दक्ख हो**—कहते है. **जहीं**—समान. **बिलावै**—समाप्त हो जाते हैं. **वेग**—शीघ्र.

३०. शब्दार्थ—

दौड़वै—दौड़ते हैं. **धारक**—पटु, सिद्ध. **जीपै**—जीतते हैं. **जमवार**—मनुष्य जन्म. **मंझली**—में. **पूरब**—पूर्व, पूर्व जन्म की. **रळी**—आनन्द. **आचां**—हाथों से. **दीधी**—दी. **आथ**—सम्पति.

३१

विलसै सुष दुष छित विपत के जस कुजस कहाय
ऊमर आयां आपणी बार गया बोलाय ।
बार गया बोलाय क ऊमर आपणी
लिषै विधाता लेष क रेषा सिर तणी
पुराचीन पुन पाय भुगतै आपरौ
जांणै सकल जिहांन नांम थिर रांम रौ ।।

३२

सैदां फारकसेन सूं आसंग दगौ अथाह
पकड़ लियौ पतसाह नूँ सोह फिर गयौ सिपाह ।
सोह फिर गयौ सिपाह राह दुहुं संकिया
वगा जेंसा वाव क औलात किया
करै निजामल कूच उजीणी चल्लिया
होय भेला इन्दसाह क साथै हल्लिया ।।

---

३१. शब्दार्थ—

विळसै—विलसित होते हैं. **छित**—चिति. **विपत**—विपत्ति. **बोळाय**—समाप्त कर गये. **सिर तणी**—भाल की. **पुराचीन**—पूर्व जन्म का. **आपरौ**—अपना. **सकळ**—समस्त.

३२. शब्दार्थ—

आसंग—विचारा, हिम्मत की. **फिर गयौ**—विपरीत हो गये. **सिपाह**—सिपाही, अंग रक्षक आदि. **संकिया**—सशंकित हुए. **वगा**—चला. **वाव**—समय का पवन. **निजामल**—निजामउलमुल्क. **भेळा**—शामिल. **इन्दसाह**—नागोर का राव इन्द्रसिंह. **हल्लिया**—चला.

३३

येत हुतै वेढक यसौ नदी मुडेग्रा नांम
मीढा कर ले मुगल जुड़ै घर गौ जांम।
जुड़ै घर गो जांम क दिषणी दल हुतां
सहर दिली बाजार क साजे रग सतां
मरण तणौ मुष साव अकारौ आवियौ
आसंगिया नह सैद पेष सच पावियौ ॥

३४

अरध मुदै यतबार धर दिल्ली कर दीवांण
सैदां फररक सजै सो सुरतांण सुभ्यांण।
सो सुरतांण सुभ्यांण दगौ कर साजियौ
लूण हरांमी तणौ क डंको (जद) बाजियौ
अजमल भीम अरोड़ क भेला आंणिया
मीडां तणा सनेह क मरणा जांणिया ॥

---

३३. शब्दार्थ—

वेढक—युद्ध निपुण. **यसौं**—ऐसा. **दिखणी**—दक्षिण के. **हुंतां**—से. **सतां**—लिये. **अकारौ**—तीव्र. **आसंगिया**—हिम्मत करना.

३४. शब्दार्थ—

फररक—फरुकशियर. **साजियौ**—दगे से सफलता प्राप्त की. **लूण-हरांमी**—नमक हरामी. **डंको बाजियौ**—चारों ओर बदनामी फैल गई. **भीम**—भीमसिंह. **अरोड़**—जैसे तैसे लालच में घेर कर. **भेळा**—शामिल. **आणिया**—लिया. **तणा**—का. **सनेह**—स्नेह.

३५

लालच कवण न लोभिया नर सुर दांणव नाग
तिसण गेडे सगाज ही आवत वधै अथाग ।
आवत वधै अथाग आव नित घट हुवै
जल अंजलि रा जेम क छिन छिन छीजवै
आंन दिस्ट भगवांन न जांणै गह गरब
संपत राज समाज छुटै पल में सरब ।।

३६

बोम हुतां तूटी बरत जल निधी फटी जिहाज
आव विघूटी असपती आसा छुटी अकाज ।
आसा छुटी अकाज क फररक आवड़ै
जकड़े कीधौ जेर जंजीरां विच जड़ै
कवण छुडावणहार वार ओढी वणी
सैंदे कीधो जिन्हैं दिली रौ सैंधणी ।।

---

३५. शब्दार्थ—

लोभिया—लोभ के वशीभूत. **तिसण**—तृस्ना. **वधै**—बढती है. **आव**—आयु. **घट**—कम. **जळ अंजळि**—जल की अंजलि. **जेम**—जैसे. **छीजवै**—कम होती जाती है. **गह गरब**—गर्वोन्मत्त. **सरब**—सर्व.

३६. शब्दार्थ—

बोम—आकाश. **हुंता**—से. **बरत**—पानी का चरस खींचने की मोटी रस्सी. **जळनिधि**—समुद्र. **आव**—आयु. **विघूटी**—समाप्त हो गई. **असपती**—बादशाह. **आसा**—जीवन की आशा. **आवड़े**—घेर कर. **जकड़े**—जकड़ कर. **जेर**—विवश, अधीन. **ओढी** टेढी, विकट. **जिन्हें**—जिसे. **सेंधणी**—वही मालिक, बादशाह.

३७

अई दइ तुझ आव में कई उपाव करंत
नर सिर मरणा जांणही आसा अमर धरंत ।
आसा अमर धरत ममता नह मुड़ै
देपौ कलजुग पूर क दिन दिन बोह चढै
पिता धणी परमेस कपट त्यां सूं करै
कहर करै क्रम करज गरज को ना सरै ।।

३८

पैस करहि पावतां बिसहर जहर बधंत
कोटि जतन जो कीजियै परकत नह पलटंत ।
परकत नह पलटंत निसल सन नीवड़ै
नेट विनादी हुंत क पता नह पड़ै
कदे न सैदां दिली उजली करी
फररक री पारोष नीवड़ी फूटरी ।।

---

३७. शब्दार्थ—

दइ—विधाता. **उपाव**—प्रपंच. **ममंता**—ममता. **मुड़ै**—कम नहीं होती. **बोह चढै**—खूब बढती ही रहती है. **धणी**—मालिक. **कहर**—अत्याचार, दुष्कर्म. **गरज............सरै**—(गरज सरना मुहावरा) काम निकलना.

३८. शब्दार्थ—

पैस—पय, दूध. **पावतां**—पिलाने पर. **बिसहर**—सर्प. **बधंत**—बढता है. **परकत**—प्रकृति **नह पलटंत**—बदलती नहीं. **निसल**—नश्ल. **नीवड़ै**—प्रकट होती है, सिद्ध होती है. **पता**—दगा. **उजळी करी**—दिल्लीका यश नहीं बढाया. **पारीष**—परीक्षा. **फूटरी**—उपयुक्त.

३९

यम आषै हसनहअली दिल्ली दीध षुदाय
येक निजामल हथ करौ कत्थ न दूजी काय।
कत्थ न दूजो काय पांय सोह लाविया
अजमल री जाबीन सवाई आविया
अमीमहमद सहत मुगल सह मिळ गया
अेक गाजवदी सुतन आण ऊभा रह्या ॥

४०

काळ बूत महमद करै तषत थयै सब तोत
पतसाई लेसां पछै मेले मुगलां मौत।
मेले मुगलां मौत तोत अेते बड़ै
कर सों जेर जिहांन समंदां लग कड़ै
उर मझ षटकै असह निजामल बस नहीं
सजा रजा दे सीस करीजै बस सही ॥

---

३९. शब्दार्थ—

यम—इस प्रकार. **आषै**—कहता है. **निजामल**—निजामउलमुल्क. **हथकरौ**—कब्जे में करो. **कत्थ**—बात. **काय**—कोई. **दूजी**—दूसरी. **पांय............लाविया**—सब को अधीन कर लिया, झुका दिया. **मिळ गया**—सैयदों की तरफ हो गये. **गाजवदी सुतन**—निजामउलमुल्क. **आण**—अपनी आन पर. **ऊभा रह्या**—अडिग खड़ा रहा.

४०. शब्दार्थ—

तषत—बादशाहत का तख्त. **तोत**—बनावटी. **मौत**—मुगलों को समाप्त करो. **अेते बड़े**—इतना बड़ा. **कड़ै**—सीमा, किनारा. **मझ**—में. **असह**—असह्य. **रजा**—स्वीकृति, राजी करना.

४१

सैद निजामल मुलक सूं वेध बधै अणथाह
पतसाई अपणावतां रजू हुवा दोय राह ।
रजू हुवा दोय राह निजामल नह मनै
लागी फौजां लार कहर धरिया किनै
मुदै दिलावर खान भीम संग मेलिया
कछवाहा जैसींग विदा कर पेलिया ।।

४२

घस फौजां चढि घत्तिया चौरंग अण चालांह
पल केतां जरदां पवां भलकंतां भालांह ।
भलकंतां भालांह पड़ै उपडांषिया
ऊपड़ रज गैंणाग अरक रथ टांकिया
कलह करेवा काज आज रा कोपिया
गिर झंगर हो गरद मरद यम ओपिया ।।

---

४१. शब्दार्थ—

वेध—वैर भाव. **अणथाह**—अपार. **रजू............राह**—दोनों ने ही दो रास्ते पकड़े. **मुदै**—प्रधान सेनापति. **संग मेलिया**—सहायतार्थ साथ भेजा. **पेलिया**—पहले ही.

४२. शब्दार्थ—

घत्तिया—प्रारम्भ किया. **चौरंग**—फौज. **अणचाळांह**—भयानक युद्ध. **पळ**—दुश्मन. **केतां**—कितने ही. **जरदां पंवां**—कंधों के सहारे कवच धारण किये हुए. **भळकंतां**—चमकते हुए. **उपडांषिया**—शिकार के लिये भूखे शेर की तरह. **गैंणाग**—गिर्द आकाश पर छा गई. **अरक**—अर्क, सूर्य. **टांकिया**—स्थिर हो गया. **कळह**—युद्ध. **कोपिया**—कुपित हुए. **गिर झंगर**—वनस्पति से लदे हुए पर्वत. **यम**—ऐसे. **ओपिया**—शोभायमान हुए.

४३

ऊजड़ वहता आषता वधता अपां आप
झड़वड़ जोड़ा उरड़ हुय नासां फड़हड़ नाद ।
नासां फड़हड़ नाद वाज तिण वार का
मूगल मेलण अणी मोहर बध मारका
पमंग नग पड़ताल सीस पड़ सेस रै
अलंगां हूंत उभाड़ पहुंता पाधरै ॥

४४

दिपण दिस दरकूच कर पहुँता रेवा पार
आया षड़े उतावला है दल़ वीस हजार ।
है दल़ वीस हजार पहुता पाधरै
सूरां मिलवा सार उभै दल़ अरवरै
जूझाऊ जिण बार त्रंबागल़ बज्जिया
सनमुष नाल़ जंबूर अरावा सज्जिया ॥

---

४३. **शब्दार्थ—**

ऊजड़—बिना रास्ते के ही. **आषता**—तेजी से. **उरड़**—एक दूसरे के आगे निकलने का यत्न. **वाज**—वाजि, घोड़े, बजते हैं. **मेळण**—भिड़ने को. **अणी**—फौज. **मारका**—वीर. **पमंग**—घोड़े. **ताल**—घोड़ों के खुरों की ध्वनि. **सेस**—शेषनाग. **अलंगा हूंत**—बहुत दूरी से. **पहुँता**—पहुँचे.

४४. **शब्दार्थ—**

रेवा—रेवा नदी. **उतावळा** तेजी से. **है दळ**—घोड़ों का समूह. **सार**—तलवार, शस्त्र. **उभै दळ**—दोनों ओर के सैन्य दल. **जूझाऊ**—युद्ध के समय नगारों की विशेष प्रकार की ध्वनि. **त्रंबागळ**—नगारे. **बज्जिया**—बजे. **नाळ**—हल्की तोपें. **जंबूर**—विशेष प्रकार की तोपें. **अराबा**—भारी तोपें.

४५

देठाला हुय दहू दलां दहु दल घुरै त्रंबाल
वापूकारै वेलियां लागा उरस लंकाल ।
लागा उरस लंकाल विढण जिण वारका
समरांगिणी अत सरस पिंड गिण पारका
उस तोने उसकार क ऊंचा चढ़िया
असुरां पढै अलाह दीया कर दट्टिया ॥

४६

वेली अला नबाब रै इंद वेली आरांण
पतसाई सूं पाधरै कर झली केवांण ॥
कर झल्लो केवांण जबां यम अक्खिया
सजदा सैदां हूँत कदे नम न किया
ऊंचा अत असमांन जमीं सक लिखियै
दै जिना रहमांन सुत नां देखियै ॥

---

४५. शब्दार्थ—

देठाळा—एक दूसरे की दृष्टि में आना. **वापूकारै**—उत्साहित करते हैं. **वेलियां**—साथियों को. **उरस**—आकाश के. **लंकाळ**—सिंह. **विढण**—युद्धरत. **जिण**—जिस. **वार**—समय. **समरांगिण**—युद्ध भूमि. **पिंड**—शरीर. **पारका**—पराये. **पढै अलाह**—अल्ला को याद कर के.

४६. शब्दार्थ—

बेली—सहयोगी, सहायता करने वाला. **इंद**—राव इन्द्रसिंह. **आरांण**—युद्ध. **झल्ली**—पकड़ी. **केवाण**—तलवार. **जबां**—जबान. **अक्खिया**—कहा. **सजदा**—अभिवादन. **कदे**—कभी भी. **नम**—झुक कर.

४७

फेर दसत पढ फातिया मुष रहमांण उचार
मुगलां आदरियौ मरण तबल बंधा तिण वार
तबल बंधा तिण वार कबांणां पाकड़ै
भगां ठौड़ न काय उरस लङ्गां अड़ै
दिल्ली चौ ग्या तषत सैदां पेलिया
केता षेल पुदाय अषेला षेलिया ।।

४८

दिस औथण थाटौ दिली हद पैंडा दौय राह
धुर षांचण नह को धमल सुज षाड़ेती साह ।
सुज षाड़ेती साह पयलां सूं पचै
सदै बयल्लां सत्थ पयल्लां नह षंचै
दूजै पुड़ कर दिली फरक उषेलिया
मारे छतीलत गरदां मेलिया ।।

---

४७. शब्दार्थ—

दसत—हाथ. **पढ फातिया**—प्रार्थना करके. **आदरियौ मरण**—मरने को कटिबद्ध हो गये. **कबांणां**—धनुष. **पाकड़ै**—तीर चढाने के लिये तैयारी करते हैं. **उरस**—आकाश. **पुदाय**—ईश्वरीय लीला. **अषेला**—अजीब, अनहोने.

४८. शब्दार्थ—

धुर—रथ की धुरी. **षांचण** खींचने वाला. **धमळ**—बैल. **षाड़ेती**—रथ को हाँकने वाला. **पयलां**—पैदल लोग. **पचै**—खूब प्रयत्न करता है. **बयल्लां**—बैलों से. **उषेलिया**—विस्थापित किया.

४९

नीची जूसर कर नहीं धमला ऊँची धार
कलियौ तूं ईज काढसी भर रथ दिल्ली भार ।
भर रथ दिल्ली भार क कलियौ तूं कढै
है धर जूपण भार अमैं मत ओछड़ै
बांमी खंचण हार क भांमी तो भुजां
बल कर धमल निबाब निजामल धर लजां ।।

५०

दाढी पर फेरे दसत बकै निजामल बत्त
पतसाई किम पालटै मो पिंड सलांमत्त ।
मो पिंड सलांमत्त दिल्ली किम पालटै
फतै गुसांई हत्थ सिपाई रिण जुटै
लूण हरांमी होय सो खत्ता पाव ही
सांम धरमी सदा जैत सुध पाव ही ।।

---

४९. शब्दार्थ—

जूसर—जूआ. **धमळा**—बैल. **ऊंची धार**—हिम्मत रख. **कळियो**—कीचड़ में फंसा हुआ. **तूं इज**—तू ही. **काढसी**—निकालेगा. **जूपण**—जुतने वाला. **ओछड़ै**—जुए को छोड़ने का प्रयत्न. **बांमी**—दांये पेच से पगड़ी बांधने वाला, राठौड़ वंशीय व्यक्ति. **भांमी**—बलिहारी. **धर लजां**—धरती की लज्जा के लिये, लज्जा को कायम रख.

५०. शब्दार्थ—

दसत—हाथ. **बत्त**—बात. **पालटै**—पलट सकती है. **किम**—कैसे, **खत्ता पाव ही**—दुर्दशा को प्राप्त होंगे. **सांम धरमी**—स्वामि धर्म का निर्वाह करने वाले. **जैत**—जीत.

५१

पड़दल् कज बोह मिल् पंखरण ग्रीभ्भण भूल गहक्क
अछरां हूरां रथ उरस थाटां सीस थरक्क ।
थाटां सीस थरक्क राग सींधू रुड़ै
पांपां आछट पाग वाग अस ऊपड़ै
घमंकै पाखर घोर धमंकै धर बगी
भमंकै आतस भाल् चमंकै जामगी ।।

५२

धैंधीगर अत धात मद बहता असमांन
थापलियां थूरण हथां पूतारै पिलवान ।
पूतारै पिलवांन गैघूंबै गज घड़ा
सज भड़ सार छतीस जरद्दां जड़ी कड़ा
काली कांठल् कहर बीज खग बल् किया
परा रह्या पग रोप क कायर पल्किया ।।

---

५१. शब्दार्थ—

पड़वळ—?. **पंखरण**—चील. **ग्रीभ्भण**—गिद्धनी. **भूल**—झुण्ड. **गहक्क**—आवज करती है, प्रसन्न होती है. **उरस**—आकाश. **थाटां**—सेनाएँ. **रुड़ै**—बजता है. **आछट**—भटका देना. **पाग**—तलवार. **वाग**—लगाम. **अस**—अश्व. **ऊपड़ै**—युद्ध के लिये लपकते हैं. **पाखर**—घोड़े की जीन. **बगी**—बजी, आवाज हुई. **भमंकै**—चमकती है. **भाळ**—ज्वाला. **जांमगी**—तोप पर लगाया जाने वाला पलीता.

५२. शब्दार्थ—

धैंधीगर—हाथी. **धात**—भागते हैं. **थापलिया**—जोश दिलाने के लिये थप्पी लगाई. **थूरण हथां**—वीरों ने. **पूतारै**—जोश दिलाने के लिये पुकारते हैं. **गैघूंबै**—गुत्थम गुत्था होती हैं. **सार छतीस**—छतीस प्रकार के शस्त्र. **जरद्दां**—कवचों. **बीज**—बिजली. **खग**—तलवार. **बळकिया**—चमकी, वश में किया. **पळकिया**—हतास हो गये, भाग गये.

५३

हरवल कंवरां गुर हुवौ गाहिड़मल गोपाल
राज इंद चल़वल़ रहै तिण वेल़ा रिण ताल ।
तिण वेल़ा रिण ताल सार झड़ बोह पड़ै
आतस छूट अपार जांण वरषा गड़ै
झाटां सांमै कमल़ सूरमां झेलिया
पंजर कटारां पेल स असुरां पेलिया ॥

५४

बल़ बल़ बीजूजल़ बल़क झलहल़ आतस झाल़
पार षंधाधर कज षहै रस लूधा रौदाल़ ।
रस लूधा रौदाल़ चलता काल़ रुप
मंडै अराबां मोहौर सराबां चौल़ मुप
तूटी टंक अढारन दूजी धार है
मुड़ै अपूठी मूठ क वडो मार है ॥

---

५३. शब्दार्थ—

हरवळ—सेना का अग्र भाग. **कंवरां गुर**—कुमारों में श्रेष्ठ. **गाहिड़मल**—वीर. **गोपाल**—गोपालसिंह. **चळवळ**—चलायमान. **रिण ताल**—युद्ध भूमि. **सार झड़**—तलवारों की झड़ी. **बोह**—अत्यधिक. **वरषा गड़ै**—वर्षा में मानों हिमपात हो रहा हो. **झाटां**—तलवार का वार. **कंवळ**—सिर. **असुरां**—मुगलों ने.

५४. शब्दार्थ—

बळ बळ—चारों तरफ. **बीजूजळ**—तलवार. **बळक**—बिजली की तरह चमकती है. **षहै**—युद्ध करते हैं. **रस लूधा**—युद्ध के रस में पगे हुए. **रौदाळ**—मुगल. **मोहौर**—आगे, सम्मुख. **सराबां...........मुष**—शराब पोने के कारण लाल मुख. **टंक अढारन**—भारी किश्म की कबान. **दूजी धार है**—दूसरी धारण करते हैं. **अपूठी मूठ**—पीठ फेरना.

५५

घसिया भड़ धारां मुहै नीघसिया नीसांण
रिण रसिया तिसिया रगत षसिया षट खुरसांण।
षटिया षट पुरसांण आजका छिब उरस
बीजल़ सावल़ हुलां ऊजल़ा भड़ बरस
हेकमनां सिघ होय विमोहा नह मुड़ै
बड़तां आघा वीर सूर बध रिण पड़ै ॥

५६

फरड़क काल़ज पंजर उर फरड़कै अत्त
रत्त दरड़कै सूरमां सरड़क गये असत्त।
सरड़क गये असत्त वीर वध वाजिया
भड़कै सोर भड़ाक गयण पुड़ गाजिया
धड़कै काची धार बरड़क्कै बगतरां
कड़कै कोपर कंध फरड़क्कै फींफरां ॥

---

५५. शब्दार्थ—

घसिया—प्रवेश किया. **भड़**—योद्धा. **धारा मुहै**—तलवार की धाराओं में. **नीघसिया**—बजे. **तिसिया**—प्यासे. **षुरसांण**—खुरासान देश की बनी तलवार. **छिब उरस**—आकाश में लगते हुए. **साबळ**—एक शस्त्र. **हुलां**—विशेष प्रकार का शस्त्र. **हेकमना**—अेक मन से. **विमोहा**—प्राणों के मोह में पड़ कर. **बड़तां आघा**—आगे बढ़ते हुए.

५६. शब्दार्थ—

फरड़क—फटने की ध्वनि. **काळज**—कलेजा. **अत्त**—आंतें. **रत्त**—रक्त. **दरड़कै**—एकदम बह पड़ता है. **सरड़क गये**—भाग गये. **असत्त**—कायर कमजोर. **वाजिया**—वीरता का प्रदर्शन किया. **गयण**—आकाश. **पुड़**—धरती के पर्त. **कोपर**—विशेष प्रकार का शस्त्र.

५७

फरद दरद म्रित फरहरै जुड़ण गरद मिल् जाय
काढै हद षंजर करद मरद जरद्दां मांय।
मरद जरद्दां मांय फुटै घट सोस रा
जुटै हटै नह जोर आवटै ऊमरा
उपटै कटै अनेक मिटै नह रिण रता
भोम पटै सिर सटै भलांई भुगतता ।।

५८

पका वहादर उजबका जुध बंका जिण वार
धर उर लै गाहक धका सैदां कटकां सार।
सैदां कटकां सार क मार संघारिया
ग्यासषान हरवल्ल मुगल पूतारिया
भूषा पंचमुष भांत षेध जूटा षलां
हसती कूंभाथलां विरोलै हाथलां ।।

---

५७. शब्दार्थ—

करद—हाथ. **जरद्दां**—कवच. **घट**—शरीर. **आवटै**—जोश में बुलते हैं. **ऊमरा**—अमीर उमराव. **रिण रता**—युद्ध में अनुरक्त. **भोम**—भूमि. **पटै**—पट्टे में, अधिकार में. **सिर सटै**—सिर की कीमत में. **भुगतता**—भोगते.

५८. शब्दार्थ—

कटकां—सेनाएँ. **संघारिया**—संहार किया. **पूतारिया**—ललकारा. **पंच मुष**—शेर. **षेध**—युद्ध की आतुरता. **जूटा षळां**—दुश्मनों पर टूट पड़े. **कूंभा थळां**—कुंभस्थल. **विरोळै**—विछिन्न करते हैं. **हाथळां**—शेर का पंजा.

५९

पेवजषां लागौ उरस भागौ नह जंग मांझ
वागौ अत षागां विढण सनमंध तागौ साझ ।
सनमंध तागौ साझ क आपौ आसंगै
पड़ियां सिर झल भार क हियौ थिर पगै
छूटै षतंग निषंग जरद अंग छेदजै
भद्रजातियां कपोल दुसारू भेदजै ।।

६०

आप निजामल ऊससै हसती हौदां मांह
आछटिया रिण बांण अत सुकर कबांण सामाह ।
सुकर कबांण समाह दिलावर साजिया
बीजूजल सेष तिष धर वाजिया
पीठ परा सिरदार फतै ज्यां पाधरै
सीसौ सोर प्रताप फुटै जरदां परै ।।

---

५९. शब्दार्थ—

सनमंध—सम्वन्ध. **तागौ**—सूत्र. **साझ**—निबाह करके. **आपौ**—अपनत्व. **षतंग**—तीर. **निषंग**—तरकश. **भद्रजातियां**—विशेष जाति का हाथी. **दुसारू**—आरपार. **भेदजे**—भेदन करता है.

६०. शब्दार्थ—

ऊससै—जोश में आता है. **हौदां**—हाथी की अम्बारी. **समाह**—संभाल कर. **दिलावर**—दिलावर खां. **बीजूजळ**—तलवार. **पाधरै**—सरल. **परै**—आरपार.

६१

पहल दिलावर साजियौ संद मुदौ सिरदार
भीम गजण रहिया भिड़ण भारथ पड़तां भार ।
भारथ पड़तां भार रोहिल नीसरै
दोस महमद साथ असती सह फिरै
तूटा मोती हार तणी पर सूर तब
षूंद मोहर षिर पड़ै राष ज्यां साष रिब ।।

६२

भीम गजण सूं भाषियौ अमर मरण अवसांण
रहसी जातां दीहड़ा बातां तणा बषांण ।
बातां तणा बषांण रहसी रावतां
जावै नह ज्यां नांम घणा जुग जावतां
सारां मुंह घट भांज अवसर जे सजै
अमर हुवा कळ मांह जिकां रा जस अजै ।।

---

६१. शब्दार्थ—

मुदौ—मुख्य. **भीम**—भीमसिंह. **गजण**—गजसिंह. **भारथ**—युद्ध. **पड़तां भार**—युद्ध की स्थिति गम्भीर होने पर. **रोहिल**—रोहिल्ला खां. **नीसरै**—निकल भागा. **फिरै**—पीठ दिखा गये. **मोतीहार**—हार के मोतियों की तरह. **षिर पड़ै**—काम आया. **साष रिब**—सूर्य के सामने अपनी साक्षी रख कर.

६२. शब्दार्थ—

अवसांण—मौका. **दीहड़ा**—दिन. **बषांण**—बखान, प्रशंसा. **घट भांज**—देह को समाप्त करने का. **अवसर.........सजै**—यदि इस अवसर का लाभ लिया जाय. **कळ**—कलयुग. **जस**—यश. **अजै**—अभी तक.

६३

मरै न सूरा मौत बिन कायर अमर न कोय
काची काया कारणै मत भूलौ जिन कोय ।
मत भूलौ जिन कोय क काया काच सी
राषी जतन न रहै भवस जद भाजसी
सूर धरै विसवास रहसी रिण सुथिर
कायर लांछण लाय मरेसी जाय घर ।।

६४

धारा तीरथ सांम ध्रम औ मोटौ अवसांण
प्रम तुठां ही पाइये कहै गजण कुलभांण ।
कहै गजण कुल भांण विलकुलै वधि विढण
षत्री पंथ षग धार क्रमंतां अत कठण
सजै सूर सकाज न भाजै मभ्क समर
त्यां साषी ससि सूर मरण ज्यां व्है अमर ।।

---

६३. **शब्दार्थ**—

काची काया—नश्वर शरीर. **भवस**—भवितव्यता. **भाजसी**—टूटेगी. **लांछण**—कायरता का कलंक. **मरेसी**—मरेगा.

६४. **शब्दार्थ**—

धारा तीरथ—युद्ध. **मोटौ**—महान. **अवसांण**—अवसर. **प्रम**—परमेश्वर. **तूठां**—प्रसन्न होने पर. **कुळभांण**—कुल का सूर्य. **विळकुळै**—आतुर होता है. **विढण**—युद्ध करने को. **षत्री पंथ**—क्षत्रिय का जीवन पथ. **क्रमंतां**—चलने में. **सकाज**—कर्त्तव्य के लिए. **साषी**—साक्षी.

६५

सांस घटै नह सूरमां दौलत दातारांह
विढण दियण म करौ विलंब पक्कि चित परांह।
पत्रियां चित्त परांह जग बंध यूं कहै
सूरां दातारांह क नांम सच रहै
मता लिखी सिर मांह क दीधो नह मिटै
घाय जुड़तां घमसांण क ऊमर नह घटै ॥

६६

रूक भीम जल गजण रह निहचै बिन्है नत्रीठ
बाजंत्र सुणै न बाजता रूकां वागां रीठ।
रूकां वागां रीठ मुड़ै नह मारका
बणिया तोरण बींद विहद जिण बार का
पांच दीह म्रित लोक तणा छा पांवणा
अरस होय ओछाह क बजै वधावणा ॥

---

६५. **शब्दार्थ—**

दातारांह—दान देने वाले. **विढण**—युद्ध करना. **दियण**—दान देने में. **म**—नहीं. **परांह**—पक्के. **मता**—धन. **सिर मांह**—भाग्य में. **दीधो**—देने से. **घाय**—घाव. **घमसांण**—युद्ध.

६६. **शब्दार्थ—**

रूक—तलवार. **भीम**—भीमसिंह. **गजण**—गजसिंह. **निहचै**—निश्चय ही. **बिन्है**—दोनों. **नत्रीठ**—दुर्दमनीय. **बाजंत्र**—युद्ध के वाद्य. **बाजता**—बजते हुए. **वागां रीठ**—शस्त्र चलते समय, युद्ध के बीच. **मारका**—वीर. **तोरण बींद**—शादी के अवसर पर मानों तोरन मारने को दूल्हा आया हो. **जिण बार का**—उस समय के. **दीह**—दिन. **म्रित लोक**—मृत्यु-लोक. **पांवणा**—पाहुने. **अरस**—युद्ध. **ओछाह**—उत्सव. **वधावणा**—स्वागतार्थ होने वाला गाना बजाना.

६७

गूघर पाषर घमकती सींधुर काजल सार
विचत्र घड़ा आई वरण धज लज लूटण धार।
धज लज लूटण धार क भालां नथ भलक
जड़ कांचू घड़ जरद भिलम टीका झलक
घड़ घूमती घाई मीर घड़ मोड़ती
हाडां लाडां हूँत छेहड़ा जोड़ती ॥

६८

हर हर जपियौ हिंदवां सिर तुलसी दल सार
अला अलायलला अला असुरां जीह उचार।
असुरां जीह उचार धार मन सांम ध्रम
मरण गिणौं तिल मात स लोभी गिण सरम
परियां भांजण परत वरत ये निरवहै
जैतषंभ रिण थंभ कथन आलम कहै ॥

---

६७. शब्दार्थ—

पाषर—जीन. **घमकती**—घम घम की आवाज. **सींधुर**—हाथी. **सार**—डाल कर. **घड़ा**—सेना. **धज**—ध्वज, शक्ति. **धार**—तलवार की धार से. **नथ**—नाक में पहिनने का चमकता हुआ आभूषण. **कांचू**—कंचुकी. **जरद**—कवच. **भिलम**—शीश त्राण. **झळक**—चमकता हुआ. **घाइ**—घावों से, रौंदती हुई. **हाडां**—भीमसिंह हाडा आदि वीर. **लाडां**—पति दूल्हा. **हूँत**—से. **छेहड़ा**—शादी का गठजोड़ा.

६८. शब्दार्थ—

सिर तुळसी दळ सार—सिर पर तुलसी चढा कर. **असुरां**—मुसलमानों ने. **जीह**—जीभ. **धार**—धारण करके. **तिल मात**—तिल के समान, तुच्छ. **परत**—पर्त. **वरत**—वृत्त. **निरवहै**—निर्वाह करते हैं. **जैतषंभ**—जीत के स्तंभ. **आलम**—संसार.

६९

हड़हड़या जोगण डंवर ब्रहब्रहया रिण तूर
ग्रहग्रहया ग्रीधां सबद सुजि पहपहिया सूर ।
सुजि पहपहिया सूर स पौरस ऊफणै
टहटहिया रिप टोल विहारां अगवणै
महमहिया वरमाल कुसम गल मंझली
सहसहिया रिण सार रंभा पूरी रली ॥

७०

भुप वरण बोल मजीठ रंग चष धिष चौल सताब
नारंग सुरंग बोल अंग रूप यसै माहराव ।
रूप यसे महाराव भिड़ै भड़ धीरपै
रांम सुतन अणरेह जीह ब्रजपति जपै
ऊछज वागौ पाग लियां भड़ आवला
रुलै गलै वरमाल क पांय अंत्रावला ॥

---

६९. **शब्दार्थ**—

रिण तूर—रण वाद्य. **ग्रीधां**—गिद्धों ने. **पहपहिया**—उमंगित हुए. **टोळ**—झुण्ड. **अवगणै**—आते हैं. **महमहिया**—मोहित हुए. **सहसहिया**—रोस में आये. **सार**—तलवार. **रळी**—आनन्द का उद्वेग.

७०. **शब्दार्थ**—

व्रण—वर्ण. **बोळ**—लाल, अत्यधिक **चष**—आंखें. **धिष**—जलते हुए. **चौळ**—लाली लिये हुए. **सताब**—तुरन्त. **यसे**—ऐसे. **महाराव**—भीमसिंह. **धीरपै**—धैर्य बंधाते हुए. **व्रजपति**—कृष्ण. **ऊछज**—साहस में उच्छ्वसित होकर. **आवला**—साथ, चारों तरफ. **पांय**—पैरों में. **अंत्रावळा**—आंतें.

७१

तन तूटौ तरवारियां वाषर पाय विलग्ग
डग बेड़ी लग्गा गयंद मसत चलै किर मग्ग।
मसत चलै किर मग्ग रांम तणौ मालियौ
पै अंत्रावल् न रहै बेड़ियां पालियौ
अरस जपौ रस षाग सुकर ऊभा रियां
तूटे रज रज हुवौ भीम तरवारियां ॥

७२

रिण मझ हाडौ भीम रज गाहिड़ रौ गाडोह
आडा दीजै अरि दलां लड़ि वायड़ लाडोह।
लड़ि वायड़ लाडोह कहाड़ो भीम रज
तेग उघाड़ी हाथ अंबाड़ी छोड़ गज
सांमा पग असमेध तणा दे रिण सजै
जुड़ विहंडाणौ पगां मिलाणौ जोत में ॥

---

७१. **शब्दार्थ—**

वाषर—अंग त्राण आदि का ढेर. **पाय**—पैरों के. **किर**—मानो. **मग्ग**—रास्ते में. **रांम तणौ**—रामसिंह का पुत्र. **पालियौ**—रोका हुआ. **तूटे**—कट कट कर. **भीम**—भीमसिंह.

७२. **शब्दार्थ—**

गाहिड़ रौ गाडोह—वीरता और बड़प्पन का वाहक. **लाडोह**—दूल्हा. **उघाड़ी**—नंगी. **असमेध**—अश्वमेध यज्ञ. **विहंडाणौ**—नष्ट हुआ. **जोत में**—ब्रह्म ज्योति में विलीन हो गया.

७३

बलिहारी हूँ बेलियां भागा नह भाराथ
धणी मोहर धारां चढै सरग गया कर साथ ।
सरग गया कर साथ भीम रा अभंग भड़
रावां छल रिण रुपै क घावां भांज घड़
रिजक विष सम अमी सुणो हो रावतां
पारौ वहतां पाग क मीठौ पावतां ।।

७४

ओलै पौह वृत आपणा देतौ कज भाराथ
सीस समापै सीलियौ सारौ हेकण साथ ।
सारौ हेकण साथ क सीस दे सीलियौ
सोहड़ां सांम सनाह विरद सांचौ कियौ
रापोजै रजपूत राड़ दिन वासतै
मर सिर दे रिण मांह क सूर सज मतै(लै) ।।

---

७३. **शब्दार्थ**—

बेलियां—साथी. **भाराथ**—युद्ध. **मोहर**—आगे. **धारां चढै**—तलवार की धारों में अपने आप को झोंकते हैं. छळ—युद्ध. **रुपै**—पैर रोप कर लड़ते हैं. **अमी**—अमृत. **रावतां**—वीरों, सामंतों. **पाग**—तलवार.

७४. **शब्दार्थ** —

ओलै—चुपचाप, छिपाकर. **वृत**—वृत्ति. **आपणा**—अपने लोगों को. **कज**—लिये. **सीलियौ**—बदला चुकाया. **सारौ**—पूर्ण. **सोहड़ां**—सच्चे वीर. **विरद**—विरुद. **सज मतै**—अपने आप तैयार होकर.

७५

विजमल भीम बषांण वै मारू तणी मरोड़
हाडां दल आगल हिचै रिण वेला राठौड़ ।
रिण वेला राठौड़ मरोड़ न मेल ही
भीम मोहर भाराथ पटहथ पेल ही
जोधौ जगतावत्त धाम चौ धरम रौ
पौहतौ स्रग लड़ विजौ हजूरी परम रौ ।।

७६

नरवरियौ नीसर नगौ जरहरियौ गज हूंत
भीमा जल जोड़ै भिड़ै कलहण पूगौ कूंत ।
कलहण पूगौ कूंत हूंत पग दापवै
रजवट वट गजसिंघ भली विध राव वे
कूरम किलमां साज कलेवर टूक कर
रसियौ जा वैकुंठ ध्यान हर सांच धर ।।

---

७५. शब्दार्थ—

बषांण—प्रशंसा. **तणी**—की. **मरोड़**—बांकपना. **आगळ**—आगे. **हिचै**—युद्ध में झूमता है. **पटहथ**—तलवार धारी, वीर. **पोहतौ**—पहुँचा. **स्रग**—स्वर्ग. **हजूरी**—सेवक.

७६. शब्दार्थ—

कूंत—युद्ध विद्या में प्रवीण, भाला. **जोड़ै भिड़ै**—साथ का साथ लड़ता है. **किलमां**—मुसलमान. **रसियौ**—युद्ध का रसिक.

७७

रिण भूपत रावत गजण लोहां हद लड़ियाह
बेली बेहू बाजुवां पहली झड़ पड़ियाह ।
पहली झड़ पड़ियाह क रावत गजन रा
नग होय नीवड़ियाह पत्रियांण पष रा
फौजां मोहरै फाब फिटक जिम नह फुटै
रिण अहरण यण रूक मुहड़ै गड जुटै ।।

७८

रावत वित दे राषजै कीजै कुरब अपार
आडा आवै अेक दिन सीस बहतां सार ।
सीस बहंतां सार क आडा ओड जे
झड़ चहंदी भींत विमोहा नह भजे
ऊभां ज्यां आरांण नृपति जोषौ नहीं
सुचि तै चित व्रत साज क सीलै वित सही ।।

---

७७. शब्दार्थ—

गजण—गजसिंह. **लोहां**—शस्त्रों से. **बेली**—साथी. **बेहू बाजुवां**—दोनों पार्श्वों के. **झड़ पड़ियाह**—कट कट कर छिन्न विछिन्न हो गये. नग............नीवड़ियाह—जिस तरह जड़ाऊ हार के नग झड़ कर गिरते हैं उसी प्रकार से गिर पड़े. **फिटक**—कायर. **अहरण**—लुहार के काम करने का स्थान या वह लोहे की स्थूल आकृति वाली वस्तु जिस पर धातु को पीटा जाता है. **गड**—पैर रोप कर.

७८ शब्दार्थ—

वित—धन. **कुरब**—सम्मान, पदवी आदि. **सार**—शस्त्र. **ओड जे**—अपने रक्षक बना लो. **चहंदी**—इच्छित. **विमोह**—व्यामोह में पड़कर. **आरांण**-युद्ध. **जोषौ**—खतरा. **वृत साज**—अपना स्वामिधर्म वृत पूरा करके.

७६

दई पत्री घर जनम दे करग दियौ केवांण
मरण दियौ धारां मुहे ज्यां जीतब परवांण ।
ज्यां जीतब परवांण अंजस जणणी करै
पड़ियां रत पिंड सार यकोतर ऊधरै
सकज भीम गजसींघ रिजक हक सीलिया
सुलतांणी जंग मांहि वडा साका किया ।।

८०

पत्री वंस पित रस लियै सेवै प्रजा सरब्ब
मरणा देणा मारणा करड़ौ घणौ किसब्ब ।
करड़ौ घणौ किसब्ब भरण अर दियण रौ
जुध अवसर जुड़ियांह पाग दन मन परौ
सांच सील साहंस सत संग लेपिये
प्रथी भुगतण हार परम अंस पेषिये ।।

---

७६. **शब्दार्थ**—

दई–विधाता. **केवांण**—तलवार. **धारां मुहे**—तलवार की धारों में. **अंजस**—अभिमान. **जणणी**—जननी. **पड़ियां**—घायल होकर गिरने पर. **पिंड सार**—रक्त से मिट्टी के पिंड बना कर पूर्वजों का तर्पण करते हैं. **यकोतर**—जन्म जन्मातर. **ऊधरै**—मुक्ति प्राप्त करते हैं. **रिजक**—राज्य आदि जीवन यापन का साधन. **सीलिया**—बदला चुकाते हैं. **साका**—बड़ा युद्ध, वीरता प्रदर्शन.

८०. **शब्दार्थ**—

पित—पृथ्वी. **सेवै**—पालते हैं, पोषण करते है. **सरब्ब**—समस्त. **करड़ौ**—विकट, कठिन. **किसब्ब**—कार्य, धंधा. **भरण**—भरण पोषण. **भुगतण हार**—भोगने वाले. **परम अंस**—परमेश्वर के अंश. **पेषिये**—देखो, समझो.

८१

बांणां गोळां सोक बज समहर बागां सार
पार अपारां अरि पड़ै भिल धारां जूंझार।
भिल धारां जूंझार वरै घड़ अब्बरी
पांति हुती मन मिटण भांत तिम की परी
केसरिया झक बोल चौळ रत सूं किया
पड़ि पौह रिजक पचाय नचीता पौढिया ॥

८२

काळौ जिम चंपियै कसण फिरियौ फुण पग फेर
तिण वेळा सैदां तणा ढाहि किया दल ढेर।
ढाहि किया दल ढेर सैदांना वज्जिया
थया दिल्ली थंभ विरुद भुजां तो छज्जिया
धाड़ निजामलमुल्क धाड़ मुगलां घड़ौ
घाय दिलावर भीम गजण नै रिण पड़ौ ॥

---

८१. शब्दार्थ—

सोक बज—आवाज होती है. **समहर**—युद्ध. **पार अपारां**—असंख्य योद्धा काम आते हैं. **धारां**—तलवार की धार. **जूंझार**—युद्ध में सिर कटने पर भी जूझने वाले. **घड़**—सेना. **अब्बरी**—कुंआरी. **पांति**—उत्कट अभिलाषा. **मिटण**—युद्ध में मरने की. **तिम**—उसी प्रकार. **चौळ**—लाल. **रत**—रक्त. **पौह**—वीर. **रिजक पचाय**—स्वामी द्वारा दिये गये जीवनयापन के साधन का ऋण चुका कर. **नचीता**—निश्चिन्त. **पौढिया**—रणस्थल में धराशायी हुए.

८२. शब्दार्थ—

काळौ—काला सर्प. **चंपियै**—दबने पर, **कसण**—पूंछ. **फुण**—फन. **सैदां**—सैयद बन्धु. **ढाहि**—ध्वस्त करके. **सैदांना**—जीत के वाद्य. **दिल्ली थांभ**—दिल्ली साम्राज्य के स्तंभ. **छज्जिया**—शोभायमान हुए. **धाड़**—धाक, दहाड़. **घड़ौ**—पक्ष, समूह. **घाय**—मारकर, समाप्त कर. **रिण**—युद्ध.

८३

आण औरंगाबाद मझ कहियौ हलकारांह
कहर निजामलमुल्क की संघारै सारांह।
संघारै सारांह येक कथ सांभलै
आलम बलती आग बयण अत प्राजलै
कर लिषिया ताकीद जबाब कहाविया
हमें निबाब समाहि सजै दल आविया ॥

८४

मुगलां ऊंडा मांडिया पनग तणै सिर पांव
जीवण करै तौ जाह घर आइ आवै तौ आव।
आइ आवै तौ आव रुका लिष मेलिया
षेल अषेला सदा सिपायां षेलिया
मरणा धारां मुँहे मरदां ज्यां मिलै
नेकी रहै जिहान भेसतां जिन भिलै ॥

---

८३. **शब्दार्थ—**

आण—आकर. **हलकारांह**—संदेशवाहकों ने. **कहर**—विपत्ति, ध्वंसात्मकता. **संघारै**—संहार करती है. **सारांह**—सब को. **कथ**—कथन. **सांभळै**—सुने. **बळती**—जलती हुई. **बयण**—वचन. **प्राजळै**—प्रज्वलित होता है. **ताकीद**—फुर्ती. **समाहि**—तैयार होकर.

८४ **शब्दार्थ—**

ऊंडा मांडिया—गहरे जमाए. **पनग**—सर्प, शेषनाग. **सिर पांव**—शेषनाग के सिर पर दृढ भाव से पैर रोप कर मानो खड़े हो गये. **जीवण करै**—जीना चाहे तो. **आइ आवै तो आव**—आयु यदि समाप्त हो गई हो तो आगे बढ. **रुका**—पत्र. **षेल अषेला**—विकट खेल, युद्ध. **धारां मुहे**—तलवार की धारों में. **भेसतां**—बहिश्त.

८५

आयौ षड़ आलमअली समर अघायौ सार
जूटै जुध वाहै जिसौ तूटै सिर तरवार।
तूटै सिर तरवार क सूर संभार ही
हूरां बरबा हूंस धाक मन धार ही
मरणौ मंगल़ होय क अमंल़ हट्टियां
आद घरे औछाह कल़ह सिर कट्टियां॥

८६

धजा फरक धैंधीगरां आधंतर असमांन
षार षंधौ आयौ षड़े षागां वाजण षान।
षागां वाजण षान अघायौ आवीयौ
धार निजर असमांन षलां सिर धावियौ
पीठ छ षंड षुरसांण पिता जैगा जदी
पौरस नेकी पूर जिनां अल़गी वदी॥

---

८५. शब्दार्थ—

षड़—घोड़ों को तीव्रता से हाँक कर. **तूटै सिर तलवार**—तलवार के सिर पर गिरने से टूक टूक हो जाते हैं. **हूरां बरबा**—हूरों का वरण करने को. **हूंस**—उत्कट इच्छा. **धाक**—उद्वेग, उत्साह. **आद**—आदि शक्ति, परमात्मा. **औछाह**—उत्सव, प्रसन्नता. **कळह**—युद्ध.

८६. शब्दार्थ—

धजा—ध्वज. **फरक**—फरफराती है. **धैंधीगरां**—हाथियों पर. **आधंतर असमांन**—आकाश के बीचो बीच. **षार षंधौ**—गुस्सैल. **षागां**—तलवारें. **असमांन**—ऊंची नजर से बहुत दूर तक देखता हुआ. **षुरसांण**—खुरासान देश का. **पूर**—पूरी तरह. **जिनां**—जिनके. **वदी**—बदी.

८७

हाथूकां वागा विहद हुयगा लथोबत्थ
धाक अछाकां लोह छक सूर झुकै ससमत्थ।
सूर झुकै ससमत्थ अवसर साझियां
मार सार तिण वार भार पड़ मांडियां
होदी तज गज हूँत क आलम झरहरै
सैद अपारां साझ क धारां ऊतरै॥

८८

राजा रहिया धनुष रुष चौरंग अचल़ चंदोल
सर जिम पुणछ ज धनष रुष हाकै मोहर हरोल़।
हाकै मोहर हरोल़ जुध भुय बांण जिम
आप रहै गज षंभ अणंचल चाप यम
पौरस व्रप अणपार सवाया ओपिया
राजा वहतां रूक डंड थिर रोपिया॥

---

८७. **शब्दार्थ—**

हाथूकां—हाथो हाथ. **हुयगा**—हो गये. **लत्थोबत्थ**—आपस में गुंथ गये. **लोह छक**—शस्त्रों के प्रहारों से छके हुए. **ससमत्थ**—समर्थ, शेषनाग का सिर झुकता है. **झरहरै**—तेजोमय प्रताप से धूजने लगता है. **साझ**—युद्ध का साज बाज, युद्ध का अवसर लाभ करके.

८८. **शब्दार्थ—**

चौरंग—युद्ध. **चंदोल**—फौज के पीछे को भाग. **सर**—तीर. **हाकै मोहर हरोळ**—फौज के आगे के भाग को धनुष से छूटे हुए तीर की तरह अपनी आवाज से उत्साहित करता है. **अणंचल**—अविचल. **चाप**—धनुष. **वप**—वपु, शरीर. **ओपिया**—शोभायमान हुआ. **रूक**—तलवार. **डंड.........रोपिया**—दंड की तरह स्थिर होकर मुकाबले में डट गया.

८९

वाका दिल्ली आविया लागी वात कलोच
जूंझ दहू बाजू झड़ै सैंद पड़ै मन सोच ।
सैंद पड़ै मन सोच असमर पाकड़ै
लड़ूं मंलाणा हूंत क आडे लोहड़ै
पल मांहे अषियात क वात हुवां रहूं
मार निजामलमुल्क पछै छत्र धार हूं ॥

९०

भाई दहुँ भेला हुवे रच मिसलत तिण वार
पड़ियौ असपत पींजरै लेषहु(हू) हूंलार ।
लेषहु हूंलार सोच मन मत करै
अबदूला सूं वचन हसन इम अवचरै
अंग वध तेज अपार भुजां वध झल्लिया
वेहै कर सांमान दिषण दिस हल्लिया ॥

---

८९. **शब्दार्थ**—

वाका—घटना की सूचना. **कलोच**—चिंतनीय. **असमर पाकड़ै**—गुस्से में तलवार पर हाथ पटकता है. **मंलाणा**—निजाममुल मुल्क का पक्ष. **आडे लोहड़ै**—भयंकर युद्ध, ऐसा शस्त्र प्रवाह जिससे सबका सफाया हो जाय. **अषियात**—प्रसिद्ध. **धार हूं**—धारण करूंगा.

९०. **शब्दार्थ**—

रच मिसलत—सलाह करके. **तिण वार**—उस समय. **असपत**—बादशाह. **पींजरै**—कैद में. **लेषहु**—नजर रखूंगा. **अवचरै**—कहता है. **सांमान**—युद्ध की सामग्री. **हल्लिया**—चले.

९१

अठै राख अबदूलषां हालै हसन अलीह
साते किर फाटा समंद दल़ उल़टा दिल्लीह।
दल़ उल़टा दिल्लीह क फाटा सात दध
हम साहै षुर बाज लग सालूरां बध
उर बध रोस अपार अफारा आविया
दहुवे फौजां ज्यां'र झंडा दरसाविया ।।

९२

जाजुल़ तेज निजाम रौ बरतै मुगलां बीच
कोयक दाव विदाव कर मेलौ सैदां मीच।
मेलौ सैदां मीच धेष मन धारियां
तेवड़िये मिसलत बड़ा तरवारियां
अमीमहमद षांन कमरदी अषिया
हैदर दगा उपाय क गोसै रषिया ।।

---

९१. शब्दार्थ—

अठै—यहाँ पर. **राख**—रख कर. **साते........समंद**—मानो सातों समुद्र फट पड़े हों (इतनी बड़ी फौज लेकर चला). **सालूरां**—मेंढक. **दध**—समुद्र. **अफारा**—जोश से फुले हुए, जबरदस्त. **ज्यां'र**—जिनके.

९२. शब्दार्थ—

जाजुळ—ज्वाजल्यमान. **बरतै**—प्रकट होता है. **दाव विदाव**—किसी न किसी युक्ति से. **मीच**—मृत्यु. **धेष**—धोखा, विचार. **तेवड़ियै**—निश्चय करके. **तरवारियां**—तलवार चलाने में प्रवीण. **अषिया**—कहा.

९३

सूरज ऊगां किरण सूं ज्यूं झलकै जळ पोस
प्रतिबिंब मुगलां मझ पड़ै जुड़ण निजामल जोस ।
जुड़ण निजामल जोस करों सब धारिया
हैदर दगा अथाग मता मन धारिया
बंधव बेटा बेल जुड़ण औछव जिकां
आपौ आसंगियाह सदा सिध व्है तिकां ॥

९४

आंण फिरै अंबषा(का)स विच अंत दिन हसनअलीह
मर मारण धरियो मतौ येक मुगल असलीह ।
येक मुगल असलीह रुकौ गुदरावियौ
अदभुत दाव बणाय नेड़ौ आवियौ
हैदर की हथवाह क फींफर फरड़कै
पंजर पंजर पार दुसारू परड़कै ॥

---

९३. शब्दार्थ—

ऊगां—उदय होने पर. **जळ पोस**—जल की राशि. **जुड़ण......जोस**—निजाममुलमुल्क का प्रभाव मुगलों पें पड़ रहा है. **धारिया**—विचारा हुआ. **बेल**—मदद पर. **आपौ आसंगियांह**—अपनी शक्ति को पहिचानने पर, क्रियान्वित करने पर. **सिध व्है**—सिद्धि को प्राप्त होते हैं.

९४. शब्दार्थ—

आंण—सौगन्ध. **अंबषास**—खास दरबार. **मर मारण**—मारना और मरना. **मतौ**—निश्चय. **गुदरावियौ**—पेश किया. **नेड़ौ**—नजदीक. **फींफर फरड़कै**—फेंफड़ा चीर दिया. **पंजर**—शरीर. **दुसारू**—आरपार. **परड़कै**—पार होते समय आवाज हुई.

९५

हसनअली मरतां हुई मुसकल सैदां मांय
है गै जर लसकर हसम लीधा साह लुटाय ।
लीधा साह लुटाय क वैर विचारियौ
मुदै हरांमी होय तषतपत मारियौ
दीधा मुगलां डांण दिली पर डांषिया
आया सिर अबदूल षड़े उपडांषिया ।।

९६

सुणियौ बंधव अत स्रवण ऊफणिया अबदूल
स्रब मुगलां नूं संघरूं कै सिर मूझ कबूल ।
कै सिर मूझ कबूल मता थिर थप्पिया
जीह नबाब जबाब अमांमा जप्पिया
उर धर धेक अपार लेख नह तज्जिया
दवै न फिरिये दीह क सीह गरज्जिया ।।

---

९५. **शब्दार्थ—**

है गै—घोड़े व हाथी. **जर**—धन. **लसकर**—लवाजमा, साथ. **हसम**—फौज. **वैर विचारियौ**—बैर भाव की प्रतिक्रिया हुई. **तषतपत**—बादशाह. **डांण**—हाथी, दाव. **उपडांषियां**—भूखे शेर की तरह.

९६. **शब्दार्थ—**

ऊफणिया—गुस्से में बेकाबू हुआ. **स्रब**—समस्त. **संघरूं**—संहार करूं. **अमांमा**—जबरदस्त. **जप्पिया**—कहे. **धेक**—जोश. **लेख**—भवितव्यता.

९७

आसंग धनि अबदूनषां आसंगियो असपत्त
चढ दरकूच चलाविया वसू रहावण बत्त ।
वसू रहावण बत्त साह सिर सालुलै
वणिया फौज बणाव घटा घण बद्दलै
औछव रजी अकास धरा पुड़ धड़हड़ै
षाग सपेषण षांत अरक रथ नह षड़ै ॥

९८

आराबा छूटा उभै सिलगै आतस सोर
हुय टांमड़क वीर हक धमचक धूंवां धोर ।
धमचक धूंवां धोर धरा रवि धूंधलै
दाढाला जमदूत दहू दल सालुलै
झगलां सिर केवाण हय पाखेरिया
झाट पड़ै नीसाट गयंदां घेरियां ॥

---

९७. **शब्दार्थ—**

आसंग—हिम्मत. **असपत्त**—बादशाह. **वसू**—पृथ्वी. **बत्त**—बात. **साह**—बादशाह. **सालूळै**—आक्रमण करता है. **बणाव**—वेश, बाना. **बद्दलै**—बादलों की. **औछव**—छा जाना, ढकना. **रजी**—गर्द. **धरा पुड़**—धरती के पर्त. **संपेषण**—देखने को. **नह षड़ै**—रथ को आगे नहीं बढाता.

९८. **शब्दार्थ—**

आराबा—तोपें. **उभै**—दोनों पक्ष. **टांमकड़**—युद्ध वाद्यों की ध्वनि. **धूंधळै**—धुंधुले हो गये. **दाढाळ**—सूअर के समान वीर. **जमदूत**—यम के दूत. **झगळां**—सिर त्राण. **पाखेरिया**—सवार, पाखरयुक्त घोड़े. **झाट**—शस्त्र का प्रहार. **नीसाट**—जोरों से.

९९

बटकां कट पड़िया बरग उतबंग नग धड़ ग्राच
बसुधा कज बांटीजियै सैदां मुगलां सांच ।
सैदां मुगलां सांच बिढण बांटीजिये
धारा बोह समोह छछोहा लीजिये
पुल कायर भगवाट सूर रिण भड़ पड़ै
पांण हरै ग्रबदूल मुगलां पाकड़ै ।।

१००

हुई ग्रज लूण हरामियां सह देषी संसार
पड़ बेड़ी ग्रबदूल पग हसन गया म्रित हार ।
हसन गया म्रित हार क द्रोही साह रा
बेहुवे पड़ी कजाह लजाया बाहरा
बे बुनियाद ग्रनाद जबद बधारिया
साहिब कर हक न्याव क सैद संघारिया ।।

---

९९. शब्दार्थ—

बटकां—टुकड़े होकर. **बरंग**—शरीर के भाग, घड़. **उतबंग**—सिर. **ग्राच**—हाथ. **बिढण**—युद्ध. **पुळ**—रवाना हुए. **भगवाट**—भागने का रास्ता. **झड़ पड़ै**—कट कट कर काम ग्राये. **पांण**—ताकत, ग्राब. **पाकड़ै**—मुगलों की ताकत बढी.

१००. शब्दार्थ—

लूण—नमक. **म्रित हार**—मृत्यु को प्राप्त होकर जीवन हार गया. **साह**—बादशाह. **कजाह**—ध्वंश, मृत्यु. **साहिब**—खुदा, ईश्वर. **न्याव**—न्याय. **सैद**—सैयद-बंधु. **संघारिया**—संहार किया.

१०१

फुरमाया फुरमाण लिख महमद कर मनहार
पतसाई राषी पगं तैं झल्ली तरवार ।
तैं झल्ली तरवार तषत थिर रष्षिया
वदै आफरीवाद असपत अष्षिया
हीमत धिनो निबाब नजामल ताह री
हुई तूझ पसाव दिली वह मांह री ।।

१०२

दे रीझे दीवांणगी है, गं दे तेड़ हजूर
पेषै छत मिसलत प्रभत पौरस नेकी पूर ।
पौरस नेकी पूर पेष भुज पूजिया
धाव पड़ै चहु चक्क अँवाकी धूजिया
अदल अमल पल मांह वरत्तै अेहवौ
जायौ न कौ अमीर बियौ तौ जेहवौ ।।

---

१०१. शब्दार्थ—

फुरमाण—फरमान. **महमद**—बादशाह मुहम्मदशाह. **मनहार**—मुनुहार करके. **राषी पगं**—स्थिर रखी, बचाई. **तैं**—तू ने. **झल्ली**—पकड़ी. **वदै**—कह कर. **आफरीवाद**—आशीर्वाद. **अष्षिया**—कहा. **तूझ पसाव**—तेरे पक्ष से.

१०२. शब्दार्थ—

रीझे—प्रसन्न होकर. **दीवांणगी**—दीवान का पद. **है**—घोड़े. **गं**—हाथी. **तेड़**—बुलाकर. **मिसलत**—विचार विमर्श, सलाह. **प्रभत**—प्रभुता. **धाव**—धाक. **चहु चक्क**—चारों दिशाओं अथवा खंडों में. **अँवाकी**—सैयदों के पक्षधारी. **अमल**—राज्य दस्तूर. **वरतै**—लागू करता है. **अेहवौ**—ऐसा. **बियौ**—दूसरा. **जेहवौ**—जैसा.

१०३

किण हिंदवांणी तुरकणी अबलग पुत्र यसोह
जायौ नह कौ जांमसी जांम निजांम जसोह ।
जांम निजांम जसोह हुवौ नह कौ हुवै
देवे दीधी दाद दुनी राहां दुवै
दिल्ली उथाली थकी भली थिल की दुरस
पीर चौईसां तणी करामात धर पुरस ।।

[इती श्री राव इन्द्रसिंह री झमाळ]

---

१०३. **शब्दार्थ—**

अबलग—अभी तक. **जांमसी**—जन्मेगा. **दुनी**—दुनियां. **उथाली**—विस्थापित की हुई. **थिल की**—स्थापित की, स्थिर की. **दुरस**—दुरस्त. **पीर चौईसां** – मुसलमान धर्म में मान्य चौबीस पीर.

ऐतिहासिक टिप्पणियें

हुकमसिंह एम. ए.

रायसिंह, छन्द १, २

यह नागोर के स्वामी राठौड़ अमरसिंह का पुत्र था। १६४९ ई० को जब वह बादशाह के पास उपस्थित हुआ तो उसको जागीर के अतिरिक्त १००० जात और ७०० सवार का मनसब मिला। वह कन्धार, चित्तौड़ तथा खजवा आदि की चढाइयों में शाही फौज के साथ रहा। पीछे से महाराजा जसवंतसिंह के खजवा से देश चले जाने पर बादशाह ने रायसिंह को ४००० जात एवं ४००० सवार का मनसब व 'राजा' का खिताब देकर जसवंतसिंह के विरुद्ध भेजा। औरंगजेब के शासनकाल में वह दाराशिकोह तथा शिवाजी पर की चढ़ाइयों में शाही फौज के साथ रहा। दक्षिण में रहते समय १६७६ ई० को उसकी मृत्यु हुई।

ओझा—जो. रा. पृ. ४१०-११

राठौड़ अमरसिंह, छन्द ४, ५

यह जोधपुर के शासक महाराजा गजसिंह का ज्येष्ठ पुत्र था, परन्तु उस पर रुष्ट रहने के कारण महाराजा ने उसको राज्य के हक से वंचित कर अपने छोटे पुत्र जसवंतसिंह को अपना उत्तराधिकारी नियत किया। १६३४ ई० में उसको लाहोर बुलाकर महाराजा ने उसे बादशाह शाहजहां से निवेदन कर पृथक् मनसब और बड़ोड़, झलाय, सांगोद आदि के परगने जागीर में दिलवाये। बादशाह शाहजहां के राज्यसमय में वह कई शाही चढ़ाइयों में शामिल रहा। शाहजहां के दूसरे राज्यवर्ष में उसे २५०० जात और १५०० सवार का मनसब मिला था, जो बढ़ते-बढ़ते ४००० जात और ३००० सवार तक हो गया था। गजसिंह की मृत्यु होने पर बादशाह ने उसे 'राव' का खिताब और नागोर की जागीर भी दे दी थी। १६४४ ई० को अमरसिंह ने बादशाह के एक प्रमुख दरबारी सलावतखां को मार डाला, इस पर अर्जुन गौड़ आदि व्यक्तियों द्वारा वह मारा गया।

ओझा—जो. रा. पृ. ४०६-१०/मां. पृ. ७१-७२

मोहकमसिंह, छन्द ६, १०

यह नागोर के राव इन्द्रसिंह का पुत्र था। जालोर में रहते हुए महाराजा अजीतसिंह व उनके रक्षकों (उदैसिंह व अर्जुनसिंह) के बीच मनमुटाव हो जाने पर उक्त सरदारों ने मोहकमसिंह को जालोर पर आक्रमण करने के लिये उकसाया, इस पर मोहकमसिंह चढ़ाई कर आया उसके पूर्व मेड़तिया कुसलसिंह अचलसिंघोत ने इसकी सूचना महाराजा को भेज दी जिससे वे सचेत हो गये, मोहकमसिंह इत्यादि सरदारों की योजना असफल रही। बादशाह फर्रुखसियर के शासनारम्भ में अजीत-सिंह पर शाही मेहरवानी कम देख वहाँ उपस्थित मोहकमसिंह ने बादशाह को खुश कर जोधपुर राज्य अर्जित करना चाहा। इसकी सूचना अजीतसिंह को मिल जाने से उक्त महाराजा ने अपने सरदार भेज उसका (मोहकमसिंह) खात्मा करवा दिया।

अजीत. पृ. ८७-६३, ६७ ६८/रा. रू. पृ. ४५८

अर्जुनसिंह, छन्द ६

प्रतापसिंह के पुत्र अर्जुनसिंह जैतावत के नागोर का कुचेरा ग्राम पट्टे में था। इसने पहले इन्द्रसिंह का पक्ष लिया फिर महाराजा अजीतसिंह के सरदारों के साथ हो लिया। जब दुर्गादास के प्रयत्नों से जालोर पर महाराजा का अधिकार हो गया तब महाराजा ने अर्जुनसिंह व उदयसिंह को वहाँ रक्षक नियुक्त किया। महाराजा इनको बहुत सम्मान देते थे। जालोर की पैदावार का अधिकाँश हिस्सा इन लोगों को ही प्राप्त होता था। बाद में महाराजा ने यह हिस्सा देना बन्द कर दिया तब अर्जुन-सिंह व उदयसिंह ने रुष्ट होकर नागोर मोहकमसिंह को संदेश भेजा कि आप जल्द आकर जालोर पर अधिकार करें। इसकी खबर महाराजा को लग गई उन्होंने जालोर छोड़ दिया। मोहकमसिंह की जालोर पर चढ़ाई के समय उक्त दोनों सरदार उसकी (मोहकसिंह) ओर मिल गये। एक बार इनका अधिकार हो गया पर महाराजा के स्वामिभक्त सरदारों ने मिलकर जालोर पुनः हस्तगत कर लिया, मोहकमसिंह व उनके सहयोगियों को हार खानी पड़ी।

अजीत. पृ ४७, ८७, ६३/रा. रू. पृ. ३८८-६०/ओझा जो रा. पृ. ५२३

उदयसिंह, छन्द ६

यह पाली के ठाकुर चांपावत लखधीर का पुत्र था। इसने शाही सेना के विरुद्ध महाराजा अजीतसिंह की ओर से अनेक युद्धों में भाग लिया। यह पहले नागोर राव इन्द्रसिंह की सेवा में रहा था। जब महाराजा का जालोर पर अधिकार हुआ तब

चांपावत उदैसिंह को वहाँ प्रधान नियुक्त किया। महाराजा इसे 'बाबोजी' कह कर पुकारते थे। महाराजा और उदयसिंह चांपावत के बीच विरोध पैदा हो जाने पर उक्त चांपावत और अर्जुनसिंह जैतावत ने मोहकमसिंह को जालोर पर चढ़ाई करने के लिये बुलाया परन्तु उनकी योजना असफल रही।

अजीत. पृ. ३७, ४३, ८७, ९३/रेउ. मा. प्र. पृ २८८-२९०

फर्रूखसियर. छन्द १८, २०, २१, ३२, ३६, ३८

यह बहादुरशाह का पौत्र और अजीमुश्शान का पुत्र था। बहादुरशाह के मरते ही उसके पुत्रों अजीमुश्शान, जहांदरशाह, जहांशाह तथा रफीउलकद्र के बीच बादशाहत के लिये झगड़ा हुआ। उनमें अजीमुश्शान एक तरफ रहा शेष तीनों भाइयों ने सम्मिलित होकर विरोध किया। युद्ध में अजीमुश्शान मारा गया। जहांदरशाह अपने दोनों भाइयों को मार कर बादशाह बना पर थोड़े समय के लिये ही राज्य उपभोग कर पाया। सैयद बन्धुओं (अब्दुलाखां व हुसेनअली) ने उससे राज्य हस्तगत कर फर्रूखसियर को दिल्ली के तख्त पर बैठाया। जहांदरशाह को फांसी देकर मार दिया गया। फर्रूखसियर के समय में शाही सत्ता का लोप सा हो गया उसका राज्य कार्य उसके वजीर सैयद चलाते थे। जब बादशाह और सैयदों के नहीं बनी तब उन्होंने बादशाह को कैद कर उसकी दोनों आंखे फोड़ दी। तत्पश्चात् बादशाह को धीरे धीरे विष देना शुरु किया परन्तु वह मरा नहीं अन्त में उसका गला घोंट दिया गया। यह घटना १७१९ ई० १७ व १८ अप्रेल की रात को हुई।

ओझा. जो. रा. पृ. ५५१, ५५३, ५७९, ५८२/रेउ. मा. प्र. पृ. ३१४/रा. रू. पृ. ५१२-१३

मोहनसिंह; छन्द १९

यह नागोर के राव इन्द्रसिंह का पुत्र था। बादशाह ने १७१६ ई० में नागोर का अधिकार अजीतसिंह को सौंपा, इस पर उन्होंने नागोर पर चढ़ाई की तब इन्द्रसिंह नागोर का परित्याग कर अपने पुत्र मोहनसिंह के साथ दिल्ली की ओर भागा। महाराजा के सरदारों ने उनका पीछा किया इन्द्रसिंह तो हाथ नहीं आया पर मोहनसिंह मारा गया।

ओझा. जो. रा. पृ. ५५५/वी. वि. भाग २, पृ. ८४१

दुरजनसिंह, छन्द १९

यह महेसदास का वंशज, जोधा सबलसिंह का पुत्र, पाटोदी ग्राम का स्वामी था। अजीतसिंह की आज्ञानुसार दुरजनसिंह, मोहकमसिंह, फतेसिंह तीनों भाई और सूरजमल (दुरजनसिंह का पुत्र) यह च्यार ही जोधा राठौड़ शेखावटी के ग्राम कासली में पहुंचे वहाँ मोहनसिंह (इन्द्रसिंह का पुत्र) आदि सरदार रुके हुए थे। दुरजनसिंह ने अवसर पाकर मोहनसिंह को सोते हुए मार डाला। इसकी इस सेवा से महाराजा बहुत खुश हुए और उसका बहुत सम्मान कर अपने साथ भोजन करवाया।

मा. प. वि भाग ३, पृ. ५१६/अजीत. पृ. ६८/मीरा. पृ. १६७

अब्दुल्लाखां (कुतुबुल्मुल्क), छन्द २१, ६०, ६१, ६५, ६६, ६७, ६६, १००

इसका नाम हसनअली था। यह सैयद हुसेनअली का बड़ा भाई था। औरंगजेब के समय में इसको खां की पदवी मिली और औरंगाबाद का अध्यक्ष बनाया गया। बाद में वह इलाहाबाद का सूबेदार भी रहा। इन लोगों सैयद बन्धुओं की शक्ति से फर्रूखसियर को दिल्ली का बादशाह बनाया। हसनअली (अब्दुल्लाखां) को सात हजारी ७००० सवार का मनसब, सैयद अब्दुल्लाखां कुतुबुल्मुल्क बहादुर यार बफादार जफरजंग की पदवी और प्रधानमंत्रित्व का पद मिला। अब्दुल्लाखां की इच्छा के विरुद्ध बादशाह द्वारा कुछ व्यक्तियों को उच्च पद तथा मनसब आदि देने से फर्रूखसियर की हत्या करदी गई। मुहम्मदशाह के राज्या-प्रारम्भ में अब्दुल्लाखां हुसेनपुर के युद्ध (१७२० ई०) में निजामुलमुल्क द्वारा पकड़ा गया तथा दो वर्ष बाद उसे जहर दे मार दिया। अब्दुल्लाखां की कैद दशा में अजीतसिंह ने बादशाह से अर्ज कराई कि यदि उसे मुक्त कर दिया तो मैं पुनः शाही सेवा में आने को तैयार हूं परन्तु इसका कोई परिणाम नहीं निकला।

मु. द भाग ३, पृ. १६५-१७२/ओझा. जो. रा. पृ. ५५४, ५८६-६०

हुसेनअलीखां (अमीररुल उमरा), छन्द २२, ३६, ६०, ६१, ६४, ६५, १००

यह अब्दुल्लाखां का छोटा भाई था। औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् शाह आलम बहादुरशाह (मुअज्जम) के बादशाह होने पर इसे तीन हजारी ३००० मनसब, डंका और नई सेना की बख्शीगिरी मिली। जहांदरशाह के बादशाह होने पर फर्रूखसियर ने भी अपने को बादशाह घोषित किया उस समय वह पूरब के सूबों में था। उसके मुसाहिब बारहा के सैयद बन्धु (अब्दुल्लाखां और हुसेनअलीखां) थे। उन्होंने जहांदरशाह को परास्त कर फर्रूखसियर को दिल्ली के तख्त पर बैठाया। परन्तु थोड़े समय

के बाद ही सैयद बन्धुओं व बादशाह के बीच विरोध पैदा हो गया। अतः हुसेनअली खां व उसके भाई अब्दुल्ला खां इत्यादि व्यक्तियों ने मिल कर फर्रुखसियर की हत्या कर दी (१७१९ ई०)। मुहम्मदशाह के राज्य के प्रारम्भिक दिनों में सैयदों व निजामुल्मुल्क के बीच खटपट हो गई इसके अतिरिक्त बादशाह भी सैयदों के पंजे से मुक्त होना चाहता था। हुसेनअलीखां ने निजाम के विरुद्ध भीमसिंह हाडा इत्यादि सरदारों को भेजा पर विजय निजाम की हुई। इस पर हुसेनअलीखां ने बादशाह के साथ आगरे से दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। इस बीच सैयदों के बढ़ते आतंक से चिंतित हो बादशाह की मां की सलाह अनुसार हुसेनअली धोखे से मार डाला गया।

ओझा जो. रा पृ. ५५१-५४, ५८०-८१, ५८६ मु. इ. भाग २, पृ १६५-६८

सवाई जयसिंह, छन्द २३, ३९, ४१

यह आमेर नरेश बिशनसिंह का पुत्र था। इसने १७२८ ई० में जयपुर नाम की नवीन राजधानी स्थापित की। बादशाह फर्रुखसियर के शासनकाल में अजीतसिंह ने सैयद बन्धुओं का और जयसिंह ने बादशाह का पक्ष लिया। जयसिंह के परामर्श अनुसार बादशाह ने अजीतसिंह को मरवाने की चेष्टा की पर वे असफल रहे। यहाँ तक जयसिंह ने कई बार सैयद बन्धुओं को खत्म करने को कहा परन्तु बादशाह पर इसका कोई असर नहीं हुआ। सैयद बन्धुओं व अजीतसिंह ने जयसिंह को दिल्ली की राजनीति से विलग करने के लिये उसे आमेर भेज दिया। पीछे सैयद बन्धुओं ने बादशाह फर्रुखसियर को खत्म कर दिया। जब सैयद बन्धुओं का १७२० ई० में पतन हो गया तब आमेर पति पुनः दिल्ली आकर शाही सेवा में लग गया। मुहम्मदशाह के दरबार में उसका महत्व बढ़ता गया। मुहम्मदशाह के कहने पर जयसिंह ने अभयसिंह को उकसा कर उसके पिता अजीतसिंह की हत्या करवादी।

ओझा. जो. रा. पृ. ५७६/टॉड. रा. पृ. ५८९, ६००/मीरा. पृ. २४०-४१

निजामुलमुल्क आसफजाह, छन्द ३२, ३९, ४०, ४१, ४९, ५०, ६०, ८२, ८३, ८९, ९२, ९३, १०१, १०३

इसका मातामह सादुल्लाखां, शाहजहां बादशाह का प्रधानमंत्री था। इसके पितामह आबिदखां का पिता आलमशेख समरकंद का एक बड़ा सरदार और शेख शहाबुद्दीन सुहरवर्दी का बंशज था। आबिदखां शाहजहां के समय में हिन्दुस्तान आया और बादशाह से परिचय होने पर शाहजादा औरंगजेब की सेवा में भर्ती होने से सम्मानित हुआ। जब औरंगजेब को भाइयों से युद्ध करना पड़ा तब यह उन युद्धों में बराबर

साथ रहा। उसकी गद्दीनशीनी होने के बाद इसे चार हजारी मनसब मिला। यह गोलकुंडा के घेरे में मारा गया। आबिदखां का पुत्र शहाबुद्दीन गाजीउद्दीनखां ऊंचे पद तक पहुँचा। इसका पुत्र निजामुल्मुल्क था जिसका जन्म १०८२ हि० (१६७० ई०) में हुआ था। यौवन में औरंगजेब का कृपापात्र था और इसे चार हजारी मंसब तथा चीन कुलीजखां की पदवी मिली। इसका वास्तविक नाम कमरुद्दीन था। वाकिनकीरा दुर्ग के घेरे के बाद इसका मंसब पांच हजारी हो गया। औरंगजेब की मृत्यु पर शाहजादों की लड़ाई में इसने दूरदर्शिता से किसी का पक्ष नहीं लिया। जब शाह आलम (बहादुरशाह) बादशाह हुआ तब इसे खानदौरां बहादुर की पदवी तथा अवध की सूबेदारी लखनाऊ की फौजदारी के साथ मिली क्योंकि उस समय तक वहाँ का फौजदार दरबार से अलग नियत होता था। वह थोड़े ही समय बाद वहाँ नए सरदारों के प्रभाव व पुराने अमीरों की कमी से नौकरी परित्याग कर दिल्ली चला आया।

जब फर्रुखसियर गद्दी पर बैठा तब इसे निजामुल्मुल्क बहादुर जफरजंग की पदवी और ७ हजारी मंसब मिला और दक्षिण का शासक नियुक्त हुआ। जब दक्षिण की अध्यक्षता अमीरुलउमरा सैयद हुसेनअली को मिली तब इसे मुरादाबाद का शासन मिला। जब हुसेनअली दक्षिण से लौट आया व फर्रुखसियर को तख्त से हटाकर नये बादशाह (रफी उद्दरजात) को उस पर बैठाया निजाम को मालवा प्रान्त का शासन मिला। बाद में वहाँ के सरदारों से विरोध होने पर वह दक्षिण को चला (११३२ हि०)। उसने असीरगढ और बुर्हानपुर नगर शांति से हस्तगत कर लिये। इस पर हुसेनअली ने भारी सेना दिलावरखां की अध्यक्षता में भेजी। दिलावरखां मारा गया। नबाब विजयी हुआ। फिर नायब आलमअलीखां को औरंगाबाद से बुरहानपुर भेजा, पर वह भी मारा गया। निजाम विजयी हो औरंगाबाद पहुँचा। सैयद हुसेन अली धोखे से मारा गया। इसका समाचार सुन अब्दुलखां ने एक शाहजादे को गद्दी पर बैठाया और सेना एकत्रित कर युद्ध को आया पर वह पकड़ा गया।[1]

ओझा के अनुसार मुहम्मदशाह के राज्य के प्रारम्भिक दिनों में ही सैयदों और निजाम के बीच विरोध पैदा हो गया था। विरोध यहां तक हो गया कि सैयदों ने उसका नाश करने के लिये सैनिक तैयारियां की। इसी बीच बादशाह ने गुप्त रूप से निजाम के पास इस आशय के पत्र भेजे कि मुझे सैयदों के पंजे से मुक्त करो।[2]

टॉड के अनुसार प्रसिद्ध कालीचखां जिसने पीछे इतिहास में निजामुल्मुल्क नाम प्रकट होकर दक्षिण में स्वाधीन भाव से हैदराबाद राज्य स्थापित किया उसने

---

१. मु. द. भाग ३, पृ. ५४३-४५.
२. ओझा जो. रा. पृ. ५८६.

दिल्ली के बादशाह की अधीनता न मान बादशाह के विरुद्ध में खड़े हो स्वाधीन भाव से दिल्ली के अधिकारी देशों को लूटकर पलायन किया ।[३]

नवाब निजामुल्मुल्क ने दक्षिण से दिल्ली पहुँच कर मंत्रित्व का खिलअत पहिरा और चाहा कि औरंगजेब के समय के नियमों को फिर से प्रचलित करे जो बन्द हो गये थे । पर सरदारों ने बादशाह के मन को विरुद्ध कर दिया । ११३५ हि० (१७२३ ई०) को गुजरात के नाजिम हैदरकुलीखां ने सामना करने की शक्ति न देख अपने को पागल प्रकट कर दिया । नवाब राजधानी चले आये । इस सेवा पुरस्कार में मंत्रित्व तथा दक्षिण के शासन के साथ इसे मालवा और गुजरात की सूबेदारी मिली । अगले वर्ष नवाब ने मुबारिजखां को परास्त कर कुल दक्षिण प्रान्त पर अपना अधिकार जमा लिया ।

बादशाह नवाब को शांत रखने के लिये सदा कृपा पत्र और पुरस्कार भेजता रहा, इसी समय इसे आसफजाह की पदवी मिली । ११५० हि० (१७३८ ई०) में बादशाह ने हठ कर इसे दरबार में बुलाया । इस पर नवाब अपने पुत्र निजामुद्दौला नासिरजंग को दक्षिण में अपना प्रतिनिधि छोड़ दिल्ली गया । दो महिने बाद मरठों को दंड देने भेजा । नादिरशाह की चढ़ाई के समाचार सुन नवाब मराठों से संधि कर राजधानी आया फिर दक्षिण जाने की छुट्टी ले वह बुरहानपुर के पास पहुँचा । नवाब के विरोधियों ने नासिरजंग को पिता का रस्ता रोकने के लिये उकसाया पर उनकी चाल असफल रही । नासिरजंग भाग गया । निजाम औरंगाबाद पहुँचा । नासिरजंग ने फिर अपने पिता आसफजाह (निजामुल्मुल्क) पर आक्रमण कर दिया पर इस बार वह पकड़ा गया ।

११५६ हि० में आसफजाह ने कर्णाटक विजय करने का निश्चय किया तथा वहाँ पहुँच त्रिचनापली दुर्ग को विजय किया जिस पर मराठों का अधिकार था । इसी प्रकार उसने अरकाट प्रान्त, बालकुंडा दुर्ग पर अपना अधिकार जमा लिया । ११६१ हि० (१७४९ ई०) में अहमदखां अब्दावली के काबुल की ओर से दिल्ली आने के समाचार सुन नवाब औरंगाबाद से बुर्हानपुर चला आया । अहमदशाह की विजय हुई अब्दावली परास्त होकर लौट गया । नवाब को इसी समय कड़ी बिमारी हो गई जो दिन प्रतिदिन बढ़ती गई आखिर वह मर गया ।

म द. भाग ३ पृ. ५४३-५०

---

३. टॉड रा. भाग २, पृ. ८६८.

भीमसिंह हाडा, छन्द ३४, ४१, ६१, ६२, ३६, ७१, ७२, ७३, ७५, ७६, ८२

महाराव रामसिंह के जाजव के युद्ध में (१७०७ ई०) वीर गति प्राप्त होने पर उसका पुत्र भीमसिंह कोटा की राजगद्दी पर बैठा। उसने भील और खीची राजपूतों के बहुत से इलाकों को दबा कर अपना राज्य बढ़ाया। फर्रुखसियर के शासनकाल में जिस समय दोनों सैयद भाई प्रबल शक्ति से भारत का शासन करते थे तब भीमसिंह ने उन दोनों सैयदों के पक्ष का अवलम्बन किया। उसे पांच हजार ५००० का मनसब प्राप्त हुआ भीमसिंह ने बूंदी पर अधिकार जमा लिया इस पर जयसिंह ने बादशाह से अर्ज कर बूंदी राज्य पुनः बुधसिंह को दिलवा दिया इससे भीमसिंह व फर्रुखसियर के बीच मनमुटाव हो गया। इधर बादशाह व सैयद बन्धुओं के नहीं बनी। उधर निजामुलमुल्क स्वतन्त्र शासक बन सैनिक तैयारी करने लगा। इस समय सैयदों ने भीमसिंह को मालवा जाने की आज्ञा दी। उसे महाराजा की पदवी, सात हजार का मनसब तथा सात हजार सवारों का अधिकारी बनाये जाने का प्रलोभन दिया गया। निजामुल्मुल्क के साथ भीमसिंह ने आपस में पगड़ी बदल कर भाई का सम्बन्ध स्थापित किया था। अतः निजाम ने भीमसिंह को समझाया कि युद्ध नहीं करे, पर भीमसिंह अपने कर्तव्य से नहीं हटा। रत्नपुर (बुरहानपुर से १७ कोस दूर) के निकट युद्ध होने पर भीमसिंह दिलावरखां आदि कई व्यक्ति मारे गये। (१७२० ई०)

ओझा जो. रा पृ. ५८६/जगदीशसिंह पृ ५५-५८/टॉड रा. प ८६७-६६

मोहम्मद अमीनखां बहादुर (एतमादुद्दौला प्रथम), छन्द ३६, ६२
कमरुद्दीनखां बहादुर (एतमादुद्दौला द्वितीय), छन्द ६२

कमरुद्दीनखां का वास्तविक नाम मीर मुहम्मद फाजिल था और यह एतमादुद्दौला मोहम्मद अमीन खां बहादुर का पुत्र था। औरंगजेब के राज्यकाल के अन्त में इसे यथोचित मनसब और कमरुद्दीनखां की पदवी मिली। सैयद हुसेनअलीखां को मरवाने में इसके पिता मोहम्मद अमीनखां भी सम्मिलित था। यह (मोहम्मद अमीन खां) मोहम्मदशाह का प्रथम वजीर बना (१७२० ई०)। दो महिने पश्चात् इसकी मृत्यु हो गई। इसके बाद निजामुलमुल्क वजीर बना जो १७२४ ई० तक रहा। तत्पश्चात् कमरुद्दीनखां वजीर बना जो २५ वर्ष (१७२४-१७४८ ई०) तक वजीर रहा। जब उसके भांनजे गैरतखां बारहा के आदमियों के साथ बादशाही सेना पर आक्रमण किया तब इसने बड़ी वीरता दिखलाई। इसका मनसब ६००० सवार हो गया था। १७३५ ई० में यह ख़ानदौरा के साथ बालाजी मरहठा पर गया जो मालवा में उपद्रव मचाए हुआ था, इसने ४ युद्ध जीते और सन्धि कराई। दूसरी बार बादशाह के साथ अली मुहम्मदखां रुहेला पर गया और तीसरी बार शाहजादे (अहमदशाह) के साथ

अहमदशाह दुर्रानी (पठान) पर सरहिंद गया जो लाहोर के इस तरफ आ पहुंचा था। इस युद्ध में कमरूद्दीन मारा गया।

सु. द. भाग ३, पृ. १२-१३/सरकार भाग १, पृ ६/ओझा जो. रा. पृ. ६३६, ६६५

दिलावरखां, छन्द ४१, ६०, ६१, ८२

इसने सैयद बन्धुओं का पक्ष लिया। मुहम्मदशाह के राज्य काल के प्रारम्भ में विद्रोह होने लगे। इलाहाबाद के सूबेदार छबेलाराम ने सैयदों के विरुद्ध विद्रोह किया बुद्धसिंह हाडा उससे जा मिला इस पर सैयदों ने १७ नवम्बर १७१६ ई० को दिलावर के साथ बूंदी पर शाही सेना भेजी। बुद्धसिंह पराजित हुआ। फिर निजामुल्मुल्क (मालवे का सूबेदार) को काबू में करने के लिये दिलावरखां को मालवा का सूबेदार बनाये जाने का प्रलोभन दिया गया। बादशाही सेना देख निजाम ने पहले तो सन्धि का प्रस्ताव रखा लेकिन दिलावरखां ने उसे अस्वीकार कर दिया। रत्नपुर के पास १७२० ई० को घोर युद्ध हुआ। दिलावर खां व भीमसिंह आदि सरदार मारे गये। विजय निजाम की रही।

सु. द भाग ३, पृ ५४५/ ओझा जो. रा पृ ५८६/जगदीशसिंह रा भाग २, पृ. ५७-५६

गर्जसिंह नरवरी, छन्द ६१, ६२, ६४, ६६, ७६, ७७, ७६, ८२

नरवर के राजा गर्जसिंह ने भी सैयदों का पक्ष लिया। १७१६ ई० में दिलावरखां की अधीनता में बूंदी पर शाही सेना भेजी गई जब गर्जसिंह भी उनके साथ था। तत्पश्चात् सैयद बन्धुओं ने दिलावरखां और भीमसिंह को निजामुल्मुल्क पर भेजा जब गर्जसिंह भी ३००० राजपूतों को लेकर उसके विरुद्ध युद्ध में भाग लेने गया था। राजपूतों को अपनी सेना के पास आते हुए देख निजाम ने तोपों में वत्ती लगवा दी गोलों की ऐसी वृष्टि हुई कि हाथी सहित गर्जसिंह और भीमसिंह मारे गये।

टॉड रा. पृ. ८६६/ओझा जो. रा. पृ ५८६/जगदीशसिह रा. भाग ३, पृ. ५८-५६

आलमअली खां, छन्द ८५

यह सैयद हुसेनअलीखां का भतीज था। १७२० ई० जून में जब निजामुल्मुल्क

से लड़ते हुए हाडा भीमसिंह आदि योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए और निजाम विजयी होकर बुरहानपुर में आकर ठहरा तब आलमअलीखां युद्ध की तैयारी कर औरंगाबाद से बुर्हानपुर को जल्दी से पहुँचा। बरार प्रान्त के अन्तर्गत ३१ जुलाई को बालपुर के निकट घोर युद्ध हुआ। इसमें आलमअलीखां साहस से वीरता दिखलाते हुए मारा गया और नवाब विजयी होकर औरंगाबाद पहुँचा।

मु. द. भाग ३, पृ. ५४५/ओझा जो. रा. पृ. ५८६

हैदरखां काशगरी, छन्द ६२, ६३

बादशाह मोहम्मदशाह तथा सैयद बन्धुओं के बीच जब विरोध बढ गया तब बादशाह ने किसी प्रकार सैयदों को खत्म करना चाहा। बादशाह की मां की मर्जी और सलाह के अनुसार एतमादुद्दौला, मुहम्मद अमीनखां, सहादतखां एवं मीर हैदरखां काशगरी ने सैयद हुसेनअली को मारने का षड़यंत्र रचा। १७२० ई० २८ सितम्बर को जब हुसेनअलीखां बादशाह से विदा होकर अपने डेरे जा रहा था मार्ग में हैदरखां ने एक अर्जी उसके सामने पेश की जिसमें मुहम्मद अमीनखां की कुछ शिकायत लिखी थी। जैसे ही हुसेनअलीखां ने उसे पढ़ना शुरु किया हैदरखां ने उसके पेट में खंजर भोंक उसे मार डाला तत्पश्चात् एक मुगल के हाथ हैदरखां भी मारा गया।

अजीत. पृ. १०२-३/ओझा जो. रा. पृ. ५८६-६०

संकेत परिचय

अजीत.	=	अजीतविलास सं. डॉ. नारायणसिंह भाटी।
ओझा. जो. रा.	=	जोधपुर राज्य का इतिहास (प्रथम व द्वितीय खंड) गौरीशंकर हीराचंद ओझा।
जगदीशसिंह रा.	=	राजपूताने का इतिहास (द्वितीय भाग) जगदीशसिंह गहलोत।
टॉड रा.	=	राजस्थान इतिहास (दूसरा भाग), जेम्स टॉड (अनुवादक बलदेव प्रसाद मिश्र)
बां.	=	बांकीदास री ख्यात, सं. पो. नरोत्तमदास स्वामी
मा. प. वि.	=	मारवाड़ रा परगनों री विगत (तृतीय भाग) सं. डॉ. नारायणसिंह भाटी।
मीरा.	=	महाराज अजीतसिंह एवं उनका युग, मीरा मित्र।
मु. द.	=	मुगल दरबार (भाग २-३) अनुवादक ब्रजरतनदास।
रा. रू.	=	राज रूपक (वीरभांण कृत) सं. पंडित रामकर्ण आसोपा।
रेउ. मा.	=	मारवाड़ का इतिहास (प्रथम भाग) पंडित विश्वेश्वर नाथ रेउ।
वी. वि. भाग २	=	वीर विनोद, श्यामलदास।
सरकार	=	मुगल साम्राज्य का पतन (भाग १) जदुनाथ सरकार।

शोक संवेदना

पिछले कुछ माह में राजस्थान के कुछ ऐसे वयोवृद्ध विद्वान इस संसार से प्रयाण कर गये जिनकी क्षति पूर्ति होना असंभव है। पुरातत्व व प्राचीन साहित्य के कर्मठ विद्वान मुनिजिनविजयजी तथा इतिहास के अधिकारी विद्वान डॉ० दशरथ शर्मा के चले जाने से राजस्थान ने ऐसे व्यक्तियों को खो दिया है जिन्होंने प्रदर्शन और प्रचार से दूर रह कर अपनी सतत साधना के बल पर हमारे अतीत की अनेक उलझी हुई कड़ियों को सुलझाया है। मुनिजी ने राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के संस्थापक संचालक के नाते जो अद्वितीय कार्य किया वह सर्व विदित है ही, गुजराती अपभ्रंश-प्राकृत ग्रंथों को प्रकाश में लाने का कार्य भी उनकी कीर्ति को चिर स्थायी बनाए रखेगा।

हमारी पत्रिका की परामर्श समिति के सदस्य और मेयोकालेज के भूतपूर्व वाइस प्रिन्सीपल प्रो० मदनसिंह जी के स्वर्गवास से भी एक बड़ी क्षति हुई है। उनका हमारी संस्था से सम्बन्ध पुराना था और उन्हीं के प्रयत्नों के फलस्वरूप शाहपुरा का ऐतिहासिक रेकार्ड शाहपुरा नरेश ने संस्थान को प्रदान किया था। उसी प्रकार डिंगल के कवि और शब्द सम्पदा के माने हुए ज्ञाता श्री रेवतसिंहजी भाटी का देहान्त भी शोकजनक है।

ईश्वर इनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—सम्पादक

परम्परा के पिछले विशेषांक

[सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी]

लोकगीत	अप्राप्य
गोरा हटजा	,,
डिंगल कोश	पुनर्मुद्रित
जेठवे रा सोरठा	अप्राप्य
राजस्थानी वात संग्रह	,,
रसराज	३)
नीति प्रकास	६)
ऐतिहासिक बातां	अप्राप्य
राजस्थानी साहित्य का आदिकाल	,,
पिंगल सिरोमणि	,,
राठौड़ रतनसिंघ री वेलि	,,
राजस्थानी साहित्य का मध्यकाल	,,
गज उद्धार ग्रंथ	३)
रसीले राज रा गीत	६)
माताजी री वचनिका	३)
राजस्थानी लोक साहित्य	६)
उम्मेदसिंह सीसोदिया रा गीत	३)
राजस्थान में राजस्थानी साहित्य की खोज	६)
ऐतिहासिक रुक्के परवाने	३)
डॉ. टैसीटरी का राजस्थानी ग्रंथ सर्वेक्षण	६)
अजीत विलास	३)
सूर्यमल मिश्रण	३)
वीर सतसई	६)
राजस्थानी व्याकरण एक अध्ययन	६)
गुण विजै व्याह	३)
हेमाणी (आधुनिक राज० काव्य)	६)
पाबूजी रा दूहा	३)
मुहणोत नैणसी	६)
अलवर री षटरितु झमाळ	३)
राजस्थानी बात साहित्य : एक अध्ययन	६)
राजस्थानी गद्य री परम्परा नै आधुनिक विकास	यंत्रस्थ

परम्परा

- त्रैमासिक शोध-पत्रिका
- वार्षिक मूल्य : दस रुपये
- प्रति भाग : तीन रुपये
- भाग : चवालीस
- सन् १९७६



राजस्थानी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित
चौपासनी विद्यालय, जोधपुर

Printed at Sumer Press, Jodhpur for Dr. Narayan Singh Bhati, Director Rajasthani Shodh Sansthan, Jodhpur (Rajasthan)